अगस्त 2024

दादावाणी

Rotail Price ₹ 20

'आप' अलग है और चंदूभाई अलग है। चंदूभाई के किसी कार्य से आपको कोई लेना-देना नहीं है और यदि चंदूभाई अतिक्रमण करे तो उनसे कहना कि आप प्रतिक्रमण करो। आपको सिर्फ जानना है कि चंदूभाई ने प्रतिक्रमण किया या नहीं किया।

मैं अलग हूँ, चंदू अलग है
(साइन्टिफिकली अलग रहो)

चंदू, तू अतिक्रमण के प्रतिक्रमण कर
(टेक्निकली भागाकार करो)

आत्मज्ञानी पूज्यश्री दीपकभाई का यु.एस.ए. सत्संग प्रवास

ह्युस्टन : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 18 से 23 जून 2024

टेम्पा : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 24 से 26 जून 2024

वर्ष : 19 अंक : 10
अखंड क्रमांक : 226
अगस्त 2024
पृष्ठ - 28

Editor : Dimple Mehta
© 2024
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Multiprint
Opp. H B Kapadiya New High School, At-Chhatral, Tal: Kalol, Dist. Gandhinagar - 382729

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 1000 रुपये
वार्षिक
भारत : 200 रुपये
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

साइन्टिफिकली अलग रहकर, टेक्निकली भागाकार करो

संपादकीय

ज्ञानी पुरुष परम पूज्य दादाश्री ने अपनी स्याद्वाद वाणी में आत्मधर्म के और व्यवहार धर्म के सर्वोत्तम स्पष्टीकरण किए हैं। ताकि निश्चय और व्यवहार के दोनों पंखों से मोक्षमार्ग में समानांतर प्रगति कर सकें। अब वाणी की सीमा ऐसी है कि एट-ए-टाइम दो व्यू पोइन्ट को क्लियर नहीं कर सकती! जब निश्चय वाली वाणी निकलती है तब ऐसा कहा जाता है कि चंदूभाई का कैसा भी आचरण हो, फिर भी आप शुद्ध ही हो और उसके अलावा बाकी सब डिस्चार्ज ही है। महात्माओं को नया चार्ज नहीं होता। परंतु यदि इस ज्ञान का दुरुपयोग होगा तो व्यवहार बिगड़ जाएगा और जिसका व्यवहार बिगड़ा, उसका निश्चय बिगड़ेगा ही। इसलिए साइन्टिफिकली प्रतिक्रमण करने की ज़रूरत नहीं है, परंतु चंदूभाई से व्यवहार में किसी को दुःख हो जाए तब व्यवहार के प्रतिस्पंदनों को साफ करने के लिए और अभिप्रायों से छूटने के लिए टेक्निकली प्रतिक्रमण की आवश्यकता है और वह भी चंदू से साइन्टिफिकली अलग रहकर, चंदू से टेक्निकली प्रतिक्रमण करवाने हैं।

आप शुद्ध हो गए और चंदूभाई को शुद्ध करना, वह आपका फर्ज़ है। परमाणु तो कब शुद्ध होते हैं कि जब उन्हें अलग 'देखें' तब और प्रतिक्रमण से परमाणु में क्या इफेक्ट होता है कि सामने वाले को जो दुःख हो गया है, उसके असर से मुक्त करवाता है और सामने वाले की परिणति बदल जाती है। लोगों को उसका अनुभव होता है इसलिए फिर छोड़ते नहीं न! प्रतिक्रमण से क्या होता है कि जागृति बढ़ती है। जागृति रहे फिर करना नहीं पड़ता, होता रहता है। किसी दिन एकांत में बैठे हों और प्रतिक्रमण करते-करते भीतर आत्मा का थोड़ा अनुभव महसूस होता है, उसका स्वाद आ जाता है। एक घंटा यदि खुद शुद्धात्मा पद में बैठकर चंदूभाई से प्रतिक्रमण करवाए तो स्वसत्ता का अनुभव होता है। प्रतिक्रमण करे उसी को पुरुषार्थ कहते हैं।

दादाश्री कहते हैं कि अंतिम प्रकार का ज्ञान ऐसा है कि उसमें प्रतिक्रमण रहता ही नहीं। लेकिन यह तो जिसे पढ़ाई की चार किताबें पढ़ना आ जाए, उसे ग्रेज्युएट बना दें, उसके जैसा है। तब फिर बीच के स्टैन्डर्ड का क्या होगा? इसलिए प्रतिक्रमण हमने अपनी ज़िम्मेदारी से बीच में रखा है। जब आपके दोष बंद हो जाएँगे और पूरा जगत् निर्दोष दिखाई देगा तब प्रतिक्रमण करने बंद होंगे।

अक्रम के ये अपूर्व प्रतिक्रमण हैं। पहले ऐसी बात कभी भी सुनी, पढ़ी या जानी न हो, ऐसा सरल मार्ग है। प्रतिक्रमण, अपने खुद के खराब भाव खत्म हो जाए उसके लिए हैं, सामने वाले को इससे कोई लेना-देना नहीं है। सामने वाले के शुद्धात्मा देखने का हेतु इतना ही है कि हम शुद्ध दशा में, जाग्रत दशा में हैं। अब आज्ञा में रहें और प्रतिक्रमणों से दोषों को साफ करें, इस तरह 'साइन्टिफिक इन्वेन्शन' (वैज्ञानिक खोज़) का उपयोग करके व्यवहार-निश्चय जागृतिपूर्वक शुद्ध हो जाएँ और मोक्षमार्ग में प्रगति कर सकें, ऐसी हृदयपूर्वक अभ्यर्थना!

जय सच्चिदानंद

साइन्टिफिकली अलग रहकर, टेक्निकली भागाकार करो

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

(सूत्र-1)

संस्कार कब बदलते हैं? रात-दिन पश्चाताप करे तब या फिर 'स्वरूप ज्ञान' हो जाए तब।

एक व्यक्ति को चोरी करने के बाद पछतावा होता है, उसे कुदरत जाने देती है। पश्चाताप करता है, उसका भगवान के वहाँ पर गुनाह नहीं है। लेकिन जगत् के लोग जो दंड देते हैं, वह इस जन्म में भुगत लेना पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन सब तो ऐसा ही मानते हैं कि झूठ बोलना पाप है, माँसाहार करना, असत्य बोलना, गलत ढंग से बर्ताव करना, वह सब खराब हैं। उसके बावजूद भी लोग गलत करते ही रहते हैं, ऐसा क्यों?

दादाश्री : 'यह सब गलत है, ऐसा नहीं करना चाहिए', ऐसा सब बोलते हैं, वे दिखावे के लिए बोलते हैं, 'सुपरफ्लुअस' बोलते हैं, 'हार्टिली' नहीं बोलते। वर्ना यदि ऐसा 'हार्टिली' बोलते तब तो उनके दोष को कुछ टाइम के बाद गए बिना चारा ही नहीं है! आपका दोष चाहे कितना भी खराब हो लेकिन यदि आपको उसका बहुत 'हार्टिली' पछतावा होता है तो वह दोष फिर से नहीं होगा। और यदि फिर से हो जाए तो उसमें भी हर्ज नहीं है लेकिन बहुत पश्चाताप करते रहो।

प्रश्नकर्ता : तो क्या मनुष्य के सुधरने की संभावना है?

दादाश्री : हाँ, बहुत ही संभावना है लेकिन सुधारने वाला होना चाहिए। उसमें एम.डी., एफ.आर.सी.एस., डॉक्टर नहीं चलेंगे। घोटाले वाला नहीं चलेगा, उसमें तो 'सुधारने वाला' चाहिए।

अब, कई लोगों को ऐसा लगता है कि बहुत पछतावा किया फिर भी वापस वही दोष होता है, तो उसे ऐसा लगता है कि 'इतना पछतावा किया फिर भी ऐसा क्यों होता है?' वास्तव में यदि 'हार्टिली' पछतावा किया हो तो उससे दोष अवश्य जाता है।

प्रतिक्रमण से हल्कापन महसूस होता है। फिर से वह दोष होने पर उसे पछतावा होता रहता है।

संस्कार कब बदलते हैं? रात-दिन पश्चाताप करे तब या फिर अपना ज्ञान मिले तो संस्कार बदलते हैं। पछतावा, वह कोई ऐसी-वैसी चीज़ नहीं है। पश्चाताप होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : पूरे दिन उल्टा-सीधा, ऐसा-वैसा करें और बाद में रात को पश्चाताप करें तो?

दादाश्री : हाँ, पश्चाताप सच्चे दिल से करें तो।

प्रश्नकर्ता : पश्चाताप करें और दूसरे दिन फिर से वैसा ही करें तो?

दादाश्री : हाँ, लेकिन सच्चे दिल से (पश्चाताप) करेगा तो काम हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : यह जो पछतावा होता है, क्या वह पूर्व जन्म के आयोजन के कारण होता है?

दादाश्री : वह इस जन्म के ज्ञान के कारण पछतावा होता है।

प्रश्नकर्ता : जीवन में हमने कुछ गलत कर्म किए हों तो उसका दुःख होता है लेकिन पश्चाताप नहीं होता, तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : उसका जो दुःख होता है, वही पश्चाताप है न! ताप के बिना कभी भी दुःख नहीं हो सकता। ठंडक में दुःख होता होगा? यह ताप, वही दुःख है। दुःख हुआ तो भी बहुत हो गया। लेकिन 'फिर से नहीं करूँगा', ऐसा बोलते हो या नहीं बोलते?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : आप सब को किस-किस (बात) में पछतावा होता है, वह लिखकर लाना। कौन से स्टेशन पर गाड़ी अटकती है, वह पता चलेगा। तो फिर वहाँ पर हम गाड़ी भेजेंगे। पछतावा हुआ, तभी से समझना कि वापस लौटना शुरू हुआ।

हमेशा किसी भी कार्य का पछतावा करो, तो उस कार्य का फल, रुपए में बारह आने तक नाश हो ही जाता है। फिर जली हुई डोरी होती है न, उसके जैसा फल आता है। वह जली हुई डोरी अगले जन्म में बस ऐसा करते ही वह उड़ जाएगी। कोई क्रिया यों ही बेकार तो जाती ही नहीं। प्रतिक्रमण करने से वह डोरी जल जाती है। लेकिन डिज़ाइन वैसी की वैसी रहती है। अब अगले जन्म में क्या करना पड़ेगा? इतना ही किया, झाड़ दिया कि उड़ गई। कोई भी क्रिया करने के बाद पछतावा करता है, वह व्यक्ति एक दिन शुद्ध हो ही जाएगा, वह निश्चित है।

(सूत्र-2)

सम्यक्त्व होने के बाद, दृष्टि सीधी होने के बाद, आत्म दृष्टि होने के बाद यथार्थ प्रतिक्रमण हो सकते हैं। प्रतिक्रमण तो उसे कहते हैं कि जिससे कपड़े धुलकर स्वच्छ हो जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : यथार्थ प्रतिक्रमण कैसे होते हैं? प्रतिक्रमण शुद्ध कैसे माने जाते हैं?

दादाश्री : समकित होने के बाद यथार्थ प्रतिक्रमण होते हैं। सम्यक्त्व होने के बाद, दृष्टि सीधी होने के बाद, आत्म दृष्टि होने के बाद यथार्थ प्रतिक्रमण हो सकते हैं। लेकिन तब तक यदि प्रतिक्रमण करोगे और पछतावा करोगे तो उससे सब कम हो जाएगा। आत्म दृष्टि नहीं हुई हो फिर भी यदि जगत् के लोग गलत हो जाने के बाद पछतावा करेंगे और प्रतिक्रमण करेंगे तो उससे पाप कम बंधेंगे। प्रतिक्रमण, पछतावा करने से कर्म खत्म भी हो सकते हैं!

कपड़े पर चाय का दाग़ लगते ही तुरंत उसे धो देते हैं, वह किसलिए?

प्रश्नकर्ता : ताकि दाग़ निकल जाए।

दादाश्री : उसी तरह यदि अंदर दाग़ लग जाए तो तुरंत धो देना चाहिए। ये लोग तुरंत धो देते हैं। कोई कषाय उत्पन्न हुआ, कुछ हुआ कि तुरंत धो देते हैं। तो साफ का साफ, सुंदर का सुंदर! आप तो बारह महीने में एक दिन करते हो, उस दिन सारे कपड़े भिगो देते हो!

हमारा 'शूट ऑन साइट' प्रतिक्रमण कहलाता है। यानी आप (ज्ञान न लिया हो) जो करते हो, उसे प्रतिक्रमण नहीं कह सकते। क्योंकि आपका एक भी कपड़ा नहीं धुलता है। और हमारे तो सब धुलकर स्वच्छ हो गए हैं। प्रतिक्रमण तो उसे कहते हैं कि जिससे कपड़े धुलकर स्वच्छ हो जाते हैं!

हर रोज़ एक-एक कपड़ा धोना पड़ता है। यह तो बारह महीने होने के बाद बारह महीनों के सारे कपड़े धोते हैं! भगवान के वहाँ तो ऐसा नहीं चलेगा। ये लोग बारह महीने बाद कपड़े उबालते हैं या नहीं? यों तो एक-एक धोने पड़ते

हैं। जब हर रोज़ के पाँच सौ-पाँच सौ कपड़े धोए जाएँगे तब काम होगा।

जितने दोष दिखते हैं, उतने कम हो जाते हैं। अभी भी दोष नहीं दिखते हैं, उसका क्या कारण है? उतना अभी भी कच्चा है। क्या बगैर दोष के हो गए हैं, जो नहीं दिखता है?

भगवान ने हर रोज़ बहीखाता लिखने के लिए कहा था, जबकि अभी तो बारह महीने बाद बहीखाता लिखते हैं। जब पर्युषण आता है, तब। भगवान ने कहा था कि यदि सचमुच में व्यापारी है तो हर रोज़ लिखना और शाम को हिसाब निकालना। बारह महीने बाद बही लिखने पर, फिर क्या याद रहेगा? उसमें कौन सी रकम याद रहेगी? भगवान ने कहा था कि सच्चा व्यापारी बनना और रोज़ का बही रोज़ लिखना और बही में कुछ भूल हो जाए, अविनय हो जाए तो तुरंत ही प्रतिक्रमण कर लेना, उसे मिटा देना।

(सूत्र-3)

हमारा ज्ञान प्राप्त करने के बाद खुद निष्पक्षपाती हो गया। क्योंकि 'मैं चंदूभाई नहीं, मैं शुद्धात्मा हूँ' यह समझ में आ जाए, उसके बाद निष्पक्षपाती हो सकता है। किसी का ज़रा सा भी दोष न दिखे और खुद के सभी दोष दिखें, तभी खुद का कार्य पूरा हुआ कहा जाता है।

तुझे तेरी सभी भूलें दिखती हैं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, भूलें तो दिखती हैं।

दादाश्री : एक भी भूल नहीं दिखती तुझे। और जितने बाल हैं, उनसे भी ज़्यादा भूलें हैं। वह कैसे समझ में आए तुझे?

प्रश्नकर्ता : वह भूल करनी या नहीं करनी, वह कर्माधीन है न?

दादाश्री : ओहोहो! यह अच्छी खोज की! देखो न, बच्चे ही हैं न, सभी इतने-इतने बच्चे! भान रहित स्थिति! देखो न, अभी भी भूल करनी या नहीं करनी, वह कर्माधीन है या क्या, अभी तो ऐसा बोलता है! कुँए में तो गिरता नहीं, वहाँ सँभलकर चलता है। समय आए तो दौड़ता है, वहाँ कर्माधीन दशा क्यों नहीं बोलता है? ट्रेन आए उस घड़ी पटरियाँ लाँघ जाता है या नहीं? वहाँ कर्माधीन क्यों नहीं कहता है।

खुद के दोष खुद को किस तरह दिखेंगे? दिखेंगे ही नहीं न! क्योंकि जहाँ मोह का साम्राज्य हो, मोह से भरे हुए! मैं फलाना हूँ, मैं ऐसा हूँ, फिर उसका मोह! खुद के पद का मोह होता है क्या? नहीं होता?

प्रश्नकर्ता : बहुत होता है!

दादाश्री : यही है, दूसरा कुछ नहीं है। निंदा करने जैसा नहीं है, पर सब जगह ऐसा ही है। इस जगत् के लोगों ने खुद के दोष देखे नहीं हैं, इसलिए ही वे दोष रहते हैं, मुकाम करते हैं आराम से!

पहले तो 'मैं ही हूँ' ऐसा रहता था, इसलिए निष्पक्षपाती नहीं हुए थे। अब 'स्वरूप ज्ञान' की प्राप्ति के बाद आप निष्पक्षपाती हो गए, (आपके) मन-वचन-काया पर आपको पक्षपात नहीं रहा। इसलिए खुद के सभी दोष दिखने शुरू हुए, और उपयोग अंदर की तरफ ही रहता है, इसलिए दूसरों के दोष नहीं दिखते! खुद के दोष दिखने लगें, इसलिए हमारा दिया हुआ 'ज्ञान' परिणामित होना शुरू हो जाता है। खुद के दोष दिखाई देने लगे इसलिए दूसरों के दोष नहीं दिखते हैं। दूसरों के दोष दिखें, वह तो बहुत बड़ा गुनाह कहलाता है। इस निर्दोष जगत् में कोई दोषित है ही नहीं, वहाँ किसे दोष दें? दोष हैं, तब तक दोष, वह अहंकार भाग है और जब तक वह भाग धुलेगा

नहीं, तब तक सारे दोष निकलेंगे नहीं और तब तक अहंकार निर्मूल नहीं होगा। अहंकार के निर्मूल होने तक दोष धोने हैं।

खुद के दोष दिखें नहीं, तब तक कुछ भी समझा नहीं है। जैसे-जैसे दोष दिखते जाते हैं, वैसे-वैसे दोष घटते जाते हैं और जैसे-जैसे दोष घटते हैं, वैसे 'जागृति' बढ़ती जाती है। किसी का ज़रा सा भी दोष न दिखें और खुद के सभी दोष दिखें, तभी खुद का कार्य पूरा हुआ कहा जाता है।

(सूत्र-4)

प्रतिक्रमण, वह कॉज़ेज़ को तोड़ता है। बाकी, यह जो हुआ, वह तो रिज़ल्ट है। अत: प्रतिक्रमण से यह साफ हो जाता है। यह तो 'साइन्टिफिक इन्वेन्शन' (वैज्ञानिक खोज) है!

प्रश्नकर्ता : हमने कुछ भूल की हो और बाद में हमें पता चले, तो फिर हम उसका प्रतिक्रमण करते हैं, तो प्रतिक्रमण करने से हम दोष मुक्त कैसे हो जाते हैं?

दादाश्री : यह जो भूल हो जाती है, वह तो परिणाम है, 'रिज़ल्ट' है। और दोष के कारण कौन से थे? वे कारण खराब थे, इसलिए हम भी प्रतिक्रमण करते हैं। उसके परिणाम के लिए नहीं, उसका परिणाम तो चाहे कुछ भी आए। अत: हम सब दोषों के कॉज़ (कारण) को खत्म कर देते हैं।

प्रश्नकर्ता : यानी यह प्रतिक्रमण कॉज़ेज़ के लिए है?

दादाश्री : हाँ, यह प्रतिक्रमण कॉज़ेज़ को मारता है, रिज़ल्ट को नहीं मारता। यह समझ में आ गया न?

किसी का हमने नुकसान किया, बाद में हम प्रतिक्रमण करते हैं, अब जो नुकसान हुआ, माना कि वह तो 'इफेक्ट' है, 'रिज़ल्ट' है। नुकसान करने का हमारा जो इरादा था, वह 'कॉज़' है। तो प्रतिक्रमण करने से वह इरादा टूट गया। यानी प्रतिक्रमण उन कॉज़ेज़ को तोड़ता है। बाकी, यह जो हुआ, वह तो रिज़ल्ट है। प्रतिक्रमण से वह स्वच्छ हो जाता है। यह तो 'साइन्टिफिक इन्वेन्शन' (वैज्ञानिक खोज) है!

प्रश्नकर्ता : यह जो प्रतिक्रमण करते हैं, तो वह प्रतिक्रमण कैसे कार्य करता है, जिससे कि अपने दोष धुल जाते हैं और हमें प्योर फॉर्म (शुद्ध रूप) में ले आता है? वह प्रतिक्रमण, उसके शुद्धात्मा के पास जाता है और सब 'वाइप' (साफ) कर आता है या फिर क्या होता है उसमें?

दादाश्री : ऐसा है न, बटन दबाने से लाइट होती है और दोबारा बटन दबाते हैं तो लाइट बंद हो जाती है। उसी तरह से यदि कुछ दोष हो जाए और प्रतिक्रमण करें तो उससे दोष बंद हो जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : हम प्रतिक्रमण करते हैं, वह कर्म के कारण ही करते हैं न? हम जो प्रतिक्रमण करते हैं, वह अपने हाथ में नहीं है, वह तो इफेक्ट (असर) है न?

दादाश्री : प्रतिक्रमण, वह इफेक्ट ही है, लेकिन इफेक्ट को इफेक्ट से तोड़ना है और वह साफ हो जाएगा, तुरंत धो डालना है। हमें कहना है कि, 'भाई, चंदूभाई, धो डालो। यह क्यों ऐसा किया?' लेकिन ऐसे कर्म करने में कोई हर्ज नहीं है जिससे सामने वाले को दु:ख नहीं होता है। किसी को किंचित्मात्र दु:ख नहीं होना चाहिए। यह तो, अनजाने में अपार दु:ख होते हैं! सामने वाले को दु:ख नहीं हो, उस तरह से आप काम लो। अतिक्रमण होना, वह स्वभाविक है लेकिन प्रतिक्रमण करना, वह अपना पुरुषार्थ है। यानी वह जो किया हो, वह साफ हो जाता है। प्रतिक्रमण से दाग़ तुरंत साफ हो जाता है।

(सूत्र-5)

हम तो इस स्वभाव के विरोधी हैं, जब तक ऐसा कुछ तय नहीं हो जाएगा, तब तक स्वभाव अपने पास पड़ा रहेगा। यह बहुत ही गूढ़ बात है। यदि आपको समझ में आ जाए तो आपका कल्याण कर देगी।

प्रतिक्रमण तो हमें वह अभिप्राय निकालने के लिए करना है। हम उस मत में रहे नहीं, ऐसे निकालने के लिए करना है। हम इस मत के विरुद्ध में है, ऐसा दिखाने के लिए प्रतिक्रमण करना है। क्या आपको समझ में आया?

प्रश्नकर्ता : जो अतिक्रमण हो गया है, उसके विरोधी है, ऐसा दिखाने के लिए प्रतिक्रमण करना है।

दादाश्री : हाँ, अपनी यह इच्छा नहीं है, ऐसा फिर से करने की। अपने स्वभाव में से ऐसा निकालने के लिए प्रतिक्रमण करना है। यदि प्रतिक्रमण नहीं करेंगे तो अपनी वह इच्छा रह गई कहलाती है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अपना तो सब *निकाली* (निपटारा) भाव है न?

दादाश्री : हाँ, *निकाली* भाव है सब, सभी *निकाली* ही है न! लेकिन आपको यदि स्वभाव में रखना हो तो रखना, उसमें आपत्ति नहीं है।

प्रश्नकर्ता : यदि वह *निकाली* है तो फिर प्रतिक्रमण किसलिए?

दादाश्री : सभी *निकाली* हैं, सिर्फ भाव ही नहीं, सभी *निकाली* है। प्रतिक्रमण तो, जितना अतिक्रमण किया, उतना ही प्रतिक्रमण करना है, दूसरा नहीं। और यदि नहीं करेंगे तो अपना स्वभाव कुछ बदलता नहीं है, वैसे का वैसा ही रहता है न! आपको समझ में आया या नहीं आया?

वर्ना विरोधी के रूप में ज़ाहिर नहीं होगा तो फिर वह मत आपके पास रहेगा। यदि गुस्सा हो जाए तो हम गुस्से के पक्ष में नहीं हैं, इसलिए प्रतिक्रमण करना है। नहीं तो गुस्से के पक्ष में हैं, ऐसा निश्चित हो गया और यदि प्रतिक्रमण करें तो हमें गुस्सा पसंद नहीं हैं, ऐसा ज़ाहिर हुआ कहलाता है। यानी उसमें से हम छूट गए। मुक्त हो गए हम, ज़िम्मेदारी कम हो गई। हम उसके विरोधी हैं, ऐसा ज़ाहिर करने के लिए कुछ साधन तो होना चाहिए न? गुस्सा आपको रखना है या निकाल देना है?

प्रश्नकर्ता : वह तो निकाल देना है।

दादाश्री : यदि निकालना हो तो प्रतिक्रमण करो। तो फिर हम गुस्से के विरोधी हैं, भाई। वर्ना गुस्से में सहमत हैं, यदि प्रतिक्रमण नहीं करें तो।

प्रश्नकर्ता : जो होना था, वह हो गया। फिर हम प्रतिक्रमण करें या नहीं करें, उसमें फर्क ही नहीं पड़ता न?

दादाश्री : चले ऐसा है। लेकिन यदि अब यह ज़्यादा करोगे तो बहुत फायदा पहुँचेगा, हाँ। आपको चले ऐसा करना है या ज़्यादा करना है?

प्रश्नकर्ता : करने की बात नहीं है, मैं तो साइन्टिफिकली (वैज्ञानिक रूप से) पूछ रहा हूँ।

दादाश्री : सबकुछ *निकाली* हैं, लेकिन जहाँ अतिक्रमण हो जाए वहाँ हमें सोच लेना चाहिए। वर्ना फिर अपना स्वभाव अपने में रह जाएगा। हम इस स्वभाव के विरोधी हैं, ऐसा तय तो होना ही चाहिए। हम उसमें सहमत नहीं हैं, ऐसा तय होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : सहमत नहीं हैं, यदि ऐसा तय हो जाए तो फिर वह प्रतिक्रमण तो मन में ही करना होता है न?

दादाश्री : वह तो मन में ही। सबकुछ मन में ही करना होता है, दूसरा कुछ करना नहीं है। बोलकर करना नहीं है, मुँह से नहीं करना है। हम उसके विरोधी हैं। प्रतिक्रमण नहीं करें लेकिन 'यह हमें अच्छा नहीं लगता', इतना बोलें तो भी बहुत हो गया। आप अलग हो गए उससे। आपको उस झंझट में नहीं रहना है।

हम तो इस स्वभाव के विरोधी हैं, जब तक ऐसा कुछ तय नहीं हो जाएगा, तब तक स्वभाव अपने पास पड़ा रहेगा। यह बहुत ही गूढ़ बात है। यदि आपको समझ में आ जाए तो आपका कल्याण कर देगी। 'गाली दी' उसमें आपत्ति नहीं है लेकिन 'गाली दी', उसके हम विरोधी हैं, ऐसा तो होना ही चाहिए न, हमें?

(सूत्र-6)

प्रतिक्रमण करें तो वह व्यक्ति सर्वोत्तम चीज़ को प्राप्त करता है। यानी यह टेकनिकली है, साइन्टिफिकली इसमें ज़रूरत नहीं रहती लेकिन टेकनिकली ज़रूरत है।

यह ज्ञान मिलने के बाद आपका चार्ज होना बंद हो गया और सिर्फ डिस्चार्ज ही रहा है। अत: अब आपके लिए यह व्यवस्थित ही है। अब आप आत्मा का पुरुषार्थ किया करें। यह अपने आप व्यवस्थित होता ही रहेगा। आपको कुछ करने को रहा नहीं है। इसमें ऐसा समझ में आता है न, डिस्चार्ज में?

प्रश्नकर्ता : यह भाव डिस्चार्ज है और यह भाव चार्ज है, अंदर हमें ऐसा फर्क कैसे पता चलेगा?

दादाश्री : 'मैं चंदूभाई हूँ' जब तक इतना ही आपकी श्रद्धा में हो, तब तक चार्ज भाव होते हैं। लेकिन आप 'शुद्धात्मा हो', अब वे चार्ज भाव बंद हो गए, नये कर्म बंधने रुक गए।

प्रश्नकर्ता : अंदर सचेत करता है कि गलत हो रहा है, फिर भी गलत हो जाता है, उसके लिए क्या करें?

दादाश्री : जो हो जाता है, वह तो चंदूभाई करते हैं, आपको क्या लेना-देना? उसके कर्ता आप नहीं हो और वह तो डिस्चार्ज है, वह चार्ज नहीं है। यह चंदूभाई जो कर रहे हैं, वह सब डिस्चार्ज हैं। चार्ज तो, आप खुद यदि चंदूभाई होते तभी होता। अब आप शुद्धात्मा हो। अभी आपको कोई सच्चे दिल से पूछे कि आप सचमुच कौन हो, तो क्या कहोगे?

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा।

दादाश्री : तो फिर आपका चार्ज नहीं होगा। व्यवहार से ही यह, चंदूभाई तो पहचानने का साधन है लेकिन उसके कर्ता नहीं है, कर्ता तो व्यवहार से है! सचमुच 'मैं चंदूभाई हूँ', 'मैं कर्ता हूँ' उससे कर्म बंधते रहते हैं। वास्तव में 'चंदूभाई हूँ', ऐसा पहले कहते थे न! अन्य कुछ नहीं जानते थे, इसलिए। अब वह छूट गया!

चार्ज होने के बाद डिस्चार्ज हुए बगैर चारा ही नहीं है। डिस्चार्ज होने के बाद चार्ज होता है या नहीं, उसकी कोई ज़रूरत नहीं है। जो डिस्चार्ज है, वह चार्ज की अपेक्षा नहीं रखता। चार्ज, डिस्चार्ज की अपेक्षा रखता ही है। हमारा ज्ञान देने के बाद सिर्फ डिस्चार्ज बचता है।

प्रश्नकर्ता : जो डिस्चार्ज हो रहा है, उसे हम देखते रहें और यदि प्रतिक्रमण न करें तो वह बढ़ेगा या घटेगा?

दादाश्री : वह कुछ बढ़ेगा नहीं। यदि प्रतिक्रमण नहीं करेंगे तो वे जो परमाणु हैं, वे वापस फिर से अगले जन्म में दिखाई देंगे।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अभी भरते नहीं, सिर्फ देखते रहते हो तो?

दादाश्री : प्रतिक्रमण करने की ज़रूरत ही नहीं है, हंड्रेड परसेन्ट (सौ प्रतिशत) ज़रूरत नहीं है। यह प्रतिक्रमण करने का तो मैंने इसलिए रखा है, वर्ना अभिप्राय से छूट नहीं पाओगे। प्रतिक्रमण किया यानी अभिप्राय के विरोधी हो गए। अब वह अभिप्राय हमारा नहीं रहा। वर्ना अभिप्राय थोड़ा सा भी रह जाएगा। इस विज्ञान में प्रतिक्रमण करने की ज़रूरत नहीं है। यह सिर्फ इसलिए रखा है कि वर्ना अभिप्राय रह जाएगा, 'कोई हर्ज नहीं है' ऐसा कहकर।

प्रश्नकर्ता : आपकी वाणी निमित्त अधीन है न, इसलिए कई बार 'दादा' प्रतिक्रमण करने के लिए मना करते हैं, कई बार प्रतिक्रमण करने के लिए कहते हैं, तो ऐसा क्यों?

दादाश्री : हम ऐसा नहीं कहते कि प्रतिक्रमण करने की ज़रूरत नहीं है और कभी कह दिया हो तो उसका ऐसा कोई खास महत्व नहीं होता, वह तो संयोग ऐसे होते हैं। वह वाणी तो संयोगानुसार निकलती है।

प्रश्नकर्ता : इसलिए यह 'पज़ल' खड़ी हो गई है।

दादाश्री : नहीं, वह पज़ल खड़ी करने की ज़रूरत ही नहीं है।

हमारा वाक्य हमेशा एक तरफा नहीं होता। सब संयोग के अनुसार होता है और 'डिपेन्ड अपॉन' (आधारित), सामने वाले के संयोग कैसे हैं!

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : अगर कोई ऐसा हो, जो ऊब जाए, तब हम ऐसा करके भी उसे आगे लाते हैं। अब यदि सामने वाला ऐसा हो कि ऊब जाए और ऊपर से यह प्रतिक्रमण का बोझ डाल दें तो? इसलिए उसे हम कहते हैं कि यह करने की ज़रूरत नहीं है। तू तेरा बाकी का सब कर, ऐसा करके हम उसे आगे बढ़ाते हैं। यानी हम संयोग अनुसार वाणी बोलते हैं। लेकिन मूल अभिप्राय तो हमारा यही रहता है कि 'प्रतिक्रमण करना चाहिए'।

शास्त्रकारों ने विरोध किया कि इसमें प्रतिक्रमण क्यों रखते हो? लेकिन उन्हें यह पता नहीं है कि यह अक्रम मार्ग है। यदि प्रतिक्रमण नहीं करेगा तो लोगों का वह अभिप्राय रह जाएगा।

हम भी प्रतिक्रमण करते हैं न! अभिप्राय से मुक्त होना ही चाहिए। प्रतिक्रमण करने में हर्ज नहीं है, लेकिन अभिप्राय रह जाए तो उसमें हर्ज है। इसलिए साइन्टिफिक रूप से इसकी ज़रूरत नहीं है लेकिन अभी आपको टेकनिकली ज़रूरत है।

प्रश्नकर्ता : और इसमें नुकसान भी क्या है? प्रतिक्रमण करने में क्या नुकसान है?

दादाश्री : नुकसान का सवाल नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तो?

दादाश्री : यों नुकसान क्या है और क्या नुकसान नहीं, उसके लिए यह नहीं रखा गया है, एक्ज़ेक्टनेस के लिए रखा गया है।

क्या नुकसान है ऐसा तो बोल ही नहीं सकते। क्या नुकसान है ऐसा कहाँ बोल सकते है, कि अपने साधारण व्यापारों में बोल सकते हैं।

प्रतिक्रमण करने वाला व्यक्ति सर्वोत्तम चीज़ को प्राप्त करता है। यानी यह टेकनिकली है, साइन्टिफिकली इसमें ज़रूरत नहीं रहती लेकिन टेकनिकली ज़रूरत है।

प्रश्नकर्ता : साइन्टिफिकली कैसे?

दादाश्री : साइन्टिफिकली वह फिर उसका डिस्चार्ज है, फिर उसे ज़रूरत ही क्या है? क्योंकि आप अलग हो और वे अलग हैं। लोगों में इतनी

सारी शक्तियाँ नहीं हैं, यदि प्रतिक्रमण नहीं करोगे तो वह अभिप्राय रह जाएगा और यदि आप प्रतिक्रमण करोगे तो अभिप्राय से अलग हुए, वह बात पक्की है न?

क्योंकि जितना अभिप्राय रहेगा, उतना मन रह जाएगा। क्योंकि मन अभिप्राय से बनता है। आगे-पीछे इतना सोचते हैं, उसके बावजूद भी रह जाता है, तो फिर थोड़ा रहेगा तो सही न! लेकिन अब उसका फल नहीं आएगा। वह हमें अभी से ही समझ में आ जाता है कि भाई, देखो जब यही ऐसा है तो वह तो इसकी तुलना में...

प्रश्नकर्ता : तो इसका अर्थ ऐसा हुआ कि 'चंदूभाई' और 'चंदूभाई' के परमाणु डिस्चार्ज हैं। अब यदि प्रतिक्रमण नहीं करेंगे तो उतने बाकी रह जाएँगे?

दादाश्री : उतना मन आपको परेशान करेगा।

प्रश्नकर्ता : यानी कॉज़ेज़ के रूप में अगले जन्म के लिए बाकी रहेगा?

दादाश्री : हंअ। अभिप्राय से मन बनता है और अभिप्राय बाकी रहा यानी उतना मन बाकी रहा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, ज्ञान मिलने से पहले जो हुआ हो, वह?

दादाश्री : उसका तो कोई सवाल ही नहीं है। वह तो ज़्यादातर इस ज्ञान से ही खत्म हो चुका होता है। यदि थोड़ा-बहुत रहेगा तो अगले जन्म में उससे कोई दिक्कत नहीं आएगी।

प्रश्नकर्ता : यानी ज्ञान लेने के बाद भी थोड़ा-बहुत बाकी रहेगा क्या?

दादाश्री : रहेगा तो सही, अपना हल हमें स्वयं ही लाना है। यदि प्रतिक्रमण नहीं किए, आलस की तो उतना बाकी रहा। पुरुषार्थ तो करना ही चाहिए न? पुरुष होने के बाद पुरुषार्थ नहीं करे, ऐसा चलेगा क्या?

चंदूभाई के किसी कार्य से आपको कोई लेना-देना नहीं है, लेकिन आपको चंदूभाई का ध्यान रखना चाहिए। क्या करते हैं? और यदि चंदूभाई अतिक्रमण करे तो कहना कि प्रतिक्रमण करो। क्रमण का अधिकार है, अतिक्रमण का अधिकार नहीं है।

(सूत्र-7)

अभिप्राय बदला कि वे शुद्ध हो गए। यदि अभिप्राय वही का वही रहा तो फिर मूल बिगाड़ रह जाएगा। किसी को गाली देना, किसी को दुःख देना, ऐसा अभिप्राय हमारा नहीं है। यानी हमने उसे शुद्ध करके परमाणु खाली कर दिए।

प्रश्नकर्ता : अब प्रतिक्रमण तो जो अभिप्राय दे देते हैं, उसके ही करने पड़ते हैं न?

दादाश्री : वह जो अभिप्राय दे दिया, वह पहले के हिसाब के कारण दिया है। अब प्रतिक्रमण करते हैं तो हम फिर से अभिप्राय नहीं बनाते, उसी तरह यदि कहे, 'इस बात से हम सहमत नहीं है, तब छूट जाएगा। पहले का बना हुआ अभिप्राय इस समय छूट जाएगा। और ऐसा समझ में आ गया तो कुछ भी दखल नहीं रहता। आपसे भूल का प्रोटेक्शन (रक्षण) हो जाए तो उसे सुधार लेना। हाँ, और कुछ नहीं करना है। यदि भूल हो जाए, किसी को नुकसान पहुँचे ऐसा हो जाए तब प्रतिक्रमण कर लिया तो हो चुका। उसका निबेड़ा आ गया।

प्रतिक्रमण का अर्थ क्या है? यह जो भूल हो रही है उसमें मैं सहमत नहीं हूँ। वह प्रतिक्रमण इट सेल्फ प्रुव (खुद ही साबित) करता है यह, कि इसमें मैं सहमत नहीं हूँ। पहले उस दोष में सहमत था कि ऐसा ही करना चाहिए। अब उसमें

सहमत नहीं हूँ। अभिप्राय बदला यानी हो गया। यह जगत् अभिप्राय से ही कायम है।

बहुत जाग्रत हों, उन्हें प्रतिक्रमण करने की ज़रूरत नहीं हैं लेकिन जिन्हें जागृति ज़रा कम हैं, उन्हें प्रतिक्रमण करने के लिए कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : यदि जागृति कम हो तब क्या प्रतिक्रमण करना ही पड़ेगा?

दादाश्री : हाँ, यानी अभिप्राय बदलने के लिए कि 'यह अभिप्राय मेरा नहीं है'। हम इस अभिप्राय में नहीं हैं। अभिप्राय से बंधे हुए थे। लेकिन अब वह अभिप्राय हमने छोड़ दिया। अब हमारा अभिप्राय उससे उल्टा है। किसी को गाली देना, किसी को दुःख देना, ऐसा अभिप्राय हमारा नहीं है। गुस्सा किया वह हमारा अभिप्राय, अब हमारा नहीं है। यानी हमने उसे शुद्ध करके परमाणु खाली कर दिए। शुद्ध करने से परमाणु विश्रसा हो जाते हैं। *संवर* (कर्म का चार्ज होना बंद हो जाना) रहता है, बंध नहीं होता और विश्रसा होता है। हालांकि विश्रसा तो जीवमात्र में हो ही रहा है लेकिन उनमें बंध डालकर विश्रसा हो रहा है। जबकि यहाँ पर बिना बंध पड़े विश्रसा होता है।

आप शुद्ध हो चुके हैं और चंदूभाई को शुद्ध करना आपका फर्ज़ है। वह *पुद्गल* (अहंकार) क्या कहता है कि, भाई, हम तो शुद्ध ही थे। आपने भाव करके हमें बिगाड़ा है और इस स्थिति तक हमें बिगाड़ दिया। नहीं तो हम में खून, मवाद, हड्डी कुछ भी नहीं था। हम तो शुद्ध ही थे, आपने हमें बिगाड़ा है। अतः अगर आपको हम से मुक्त होना हो, मोक्ष में जाना हो, तो सिर्फ आपके शुद्ध होने से ही कुछ नहीं बदलेगा। जब हमें शुद्ध करोगे तभी आपका छुटकारा होगा। आपको समझ में आया न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा।

दादाश्री : अतः हमने क्या आज्ञा दी हैं? कि इसका समभाव से *निकाल* करना। हाँ, और शुद्ध ही देखना। और यदि चंदूभाई से अंदर से ऐसा हो जाए कि किसी को अच्छा न लगे, तो उन्होंने अतिक्रमण किया है इसलिए प्रतिक्रमण करो। इससे ऐसा कहना चाहते हैं कि 'हम उसके अभिप्राय के विरुद्ध हैं। हमने अपना अभिप्राय बदल दिया। अब हम पहले वाले अभिप्राय में नहीं हैं।' अभिप्राय बदला कि वे शुद्ध हो गए। यदि अभिप्राय वही का वही रहेगा तो फिर मूल बिगाड़ रह जाएगा। अभिप्राय बदलने के लिए है यह!

प्रश्नकर्ता : तो संपूर्ण अभिप्राय रहित कैसे हो सकते हैं?

दादाश्री : आपको यह अभिप्राय रहित ज्ञान ही दिया है। बाइ रियल व्यू पोइन्ट, वह 'शुद्धात्मा' है और बाइ रिलेटिव व्यू पोइन्ट, वह 'नगीनभाई' है और रिलेटिव मात्र कर्म के अधीन होने से 'नगीनभाई' भी निर्दोष हैं। यदि खुद स्वाधीन होते तो 'वे' दोषित माने जाते लेकिन 'वह' बेचारा तो लट्टू जैसा है। इसलिए 'वह' निर्दोष है। 'वैसे शुद्धात्मा है और बाहर से निर्दोष है'। बोलो अब, वहाँ पर अभिप्राय बनाने का ही कहाँ रहा?

(सूत्र-8)

परमाणु क्या कहते हैं, 'हम अपनी मर्ज़ी से अशुद्ध नहीं हुए हैं, आपने, अपने भावों का लेप लगाया इसलिए हम अशुद्ध हो गए। अतः आप हमें शुद्ध करोगे तभी आप मुक्त हो सकोगे, वर्ना नहीं हो सकोगे। हम जिस स्थिति में थे, उसी में ला दो। वह जोखिमदारी आपकी है।'

यह पूरा जगत् *पुद्गलमय* ही है। लेकिन जो सारे स्वाभाविक परमाणु हैं, उन्हें विश्रसा कहा जाता है। तो जब तक, 'मैं चंदूभाई हूँ', ऐसा था तब तक पूरे दिन धर्म क्रिया करे तब भी वे परमाणु

अंदर दाखिल होते रहते थे, *पूरण* होते रहते थे। क्योंकि 'अरे भई परमाणु, आप क्यों मेरे घर में घुस रहे हो?' तब वे (परमाणु) कहते हैं कि, ''आप खुद ही *पुद्गल* हो। आप यदि आत्मा हो तो हम आ ही नहीं सकेंगे। हाँ! आप कहते हो, 'मैं चंदूभाई हूँ', इसलिए हम आते हैं।'' अब, 'मैं शुद्धात्मा हूँ' कहने से ये सारे परमाणु अंदर दाखिल नहीं होते। चाहे कोई भी क्रिया करो लेकिन परमाणु दाखिल नहीं होंगे और यदि परमाणु दाखिल हो जाएँ तो *पुद्गल पूरण* होता ही रहेगा और उसका वापस *गलन* होगा।

किसी को अगर गालियाँ दो और तब गरम हुआ या कुछ भी हुआ, लेकिन (यदि) समभाव से *निकाल* किया तो विश्रसा होकर चले जाएँगे। अब वे क्या कहते हैं? *पुद्गल* की शिकायत है। *पुद्गल* कहता है कि आप तो शुद्धात्मा हो गए, हम भी यह स्वीकार करते हैं कि दादा ने आपको मुक्त कर दिया लेकिन हमारा क्या? हमें दादा मुक्त नहीं कर सकते। जितना हमें किया जा सकता था, उतना कर दिया है दादा ने, बाकी का आपको करना है। क्योंकि आप ज़िम्मेदार हो। हम तो शुद्ध ही थे, आपने ही बिगाड़ा है। हमें शुद्ध किए बिना आप मुक्त नहीं हो सकोगे। क्योंकि परमाणु क्या कहते हैं, 'हम अपनी मर्ज़ी से अशुद्ध नहीं हुए हैं, आपने, अपने भावों का लेप लगाया इसलिए हम अशुद्ध हो गए। अतः आप हमें शुद्ध करोगे तभी आप मुक्त हो सकोगे, वर्ना नहीं हो सकोगे। हम जिस स्थिति में थे, उसी में ला दो। वह जोखिमदारी आपकी है।'

(सूत्र-9)

यह तो साइन्टिफिक विज्ञान है। जागृति इतनी कि फिर वह प्रतिक्रमण आपको नहीं करना है, चंदूभाई को करना है। आपको जानना है कि चंदूभाई ने प्रतिक्रमण किया या नहीं किया। प्रतिक्रमण किया यानी उससे अलग रहा। इसलिए उसे स्वच्छ किया कहा जाता है।

प्रश्नकर्ता : दादा, हम इस शरीर के एक-एक परमाणु को शुद्ध करने के लिए इसे जो भी होता है, उसे हम ज्ञाता-द्रष्टा रहकर देखते रहें, तो वे शुद्ध हो जाते हैं या प्रतिक्रमण करने से शुद्ध होते हैं?

दादाश्री : नहीं, नहीं, ज्ञाता-द्रष्टा रहने से ही शुद्ध हो जाएगा। प्रतिक्रमण है, वह प्रज्ञा का काम है, इसलिए बहुत फर्क पड़ जाता है।

प्रश्नकर्ता : तो प्रतिक्रमण से क्या होता है, दादा?

दादाश्री : प्रतिक्रमण से क्या होता है कि कोई ऐसा बड़ा दोष हो गया हो, जिससे सामने वाले को दुःख हुआ हो, तो हमें इन्हें (खुद अपने आपको, चंदू को) कहना पड़ेगा कि, 'चंदूभाई, ऐसा मत करो।' अतिक्रमण किया है इसलिए आपको प्रतिक्रमण करना है। ऐसा अतिक्रमण नहीं किया हो जिससे कि किसी को दुःख हुआ हो तो प्रतिक्रमण करने की ज़रूरत नहीं है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन क्या प्रतिक्रमण से परमाणु शुद्ध नहीं हो जाते?

दादाश्री : नहीं, प्रतिक्रमण से परमाणु शुद्ध नहीं होते। देखते ही हम अलग हो जाते हैं। उन्हें शुद्ध देखा तो वे अलग और हम अलग। जगत् अशुद्ध देखता है। क्योंकि 'मैं कर्ता हूँ', उस भाव से करता है। और अब ऐसे भाव हुए हैं कि, 'मैं इसका कर्ता नहीं हूँ' तो वे अलग।

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण का क्या इफेक्ट होता है? आपने ऐसा कहा है कि प्रतिक्रमण से परमाणु शुद्ध नहीं होते, तो प्रतिक्रमण से क्या होता है?

दादाश्री : परमाणु तो कब शुद्ध होंगे कि

(जब) उन्हें 'देखेंगे', तब। और प्रतिक्रमण से परमाणुओं पर क्या इफेक्ट होता है कि उसे जो दुःख हुआ है, उसका उस पर असर रह जाएगा, तो वह बैर बाँधेगा। जहाँ तक हो सके अपने कारण वह असर नहीं होना चाहिए। तो हमें चंदूभाई से कहना है, 'प्रतिक्रमण करो।' ताकि सामने वाले पर असर न रहे, बस।

प्रश्नकर्ता : मान लीजिए कि आपने मेरे मन को ठेस पहुँचाई और आप प्रतिक्रमण कर लें तो क्या मुझ पर उसका इफेक्ट नहीं रहेगा?

दादाश्री : बाहर सभी से ऐसा कह सकते हैं कि प्रतिक्रमण से शुद्ध होता है, साधारणतया। वास्तव में *पुद्गल* को ज्ञान से स्वच्छ करना है। (यदि) वह नहीं हो पाएगा इसलिए साधारणतया कह देता हूँ, कि प्रतिक्रमण करना। प्रतिक्रमण किया यानी उससे अलग रहा। यानी उसे स्वच्छ किया कहा जाता है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, हमें इतना पता चलता है कि यह प्रकृति है। प्रकृति है इसलिए ऐसा कह देते हैं।

दादाश्री : प्रकृति करती है उतना पता है लेकिन उसे ज्ञान से विलय करना चाहिए। अज्ञान से भरे हुए को ज्ञान से जाने दो क्योंकि वह सारी प्रकृति है और परमाणु हैं। वे परमाणु कैसे हैं? तो कहते हैं, कि मिश्रसा परमाणु हैं। मिश्रसा अर्थात् भरे हुए और फल देने वाले कहे जाते हैं। भरे हुए माल की वजह से ऐसा कह देते हैं यानी उन्होंने फल दिया। उस समय वे जो परमाणु हैं, उन्हें यदि स्वच्छ करके भेज देंगे तो फिर हमारा उन परमाणुओं से झगड़ा नहीं रहेगा।

यानी आप इस प्रकार से शुद्धिकरण करके, इसे *निकाली* बात बना दो। यानी परमाणु विश्रसा हो गए तो आप छूट गए। अब इन सभी से शुद्ध करने की क्रिया नहीं हो पाती, इसलिए इनसे कहते हैं कि प्रतिक्रमण करना तो हो जाएगा शुद्ध। इनसे यह सब कैसे हो पाएगा?

यह तो साइन्टिफिक विज्ञान है। जागृति इतनी कि फिर आपको प्रतिक्रमण नहीं करना है, चंदूभाई को करना है। आपको जानना है कि चंदूभाई ने प्रतिक्रमण किया या नहीं किया। अतिक्रमण भी चंदूभाई ही करते हैं न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, अतिक्रमण वही करता है। इसलिए प्रतिक्रमण भी उसी से ही करवाना है?

दादाश्री : हाँ, प्रतिष्ठित आत्मा अतिक्रमण करता है और प्रतिष्ठित आत्मा को ही प्रतिक्रमण करना है। प्रतिक्रमण 'आपको' नहीं करना है, जो गुनाह करता है, उसे करना है। डिस्चार्ज के गुनाह और डिस्चार्ज का प्रतिक्रमण। अतिक्रमण भी डिस्चार्ज का और प्रतिक्रमण भी डिस्चार्ज का (यह बात ज्ञान प्राप्त लोगों के लिए ही है)।

प्रश्नकर्ता : निश्चय आत्मा तो कर्मबंध करता ही नहीं है, तो फिर निश्चय प्रतिक्रमण तो है ही नहीं न?

दादाश्री : निश्चय आत्मा तो खुद अलग ही हो गया है। लेकिन यह प्रकृति क्या कहती है? आपने हमें बिगाड़ा था, हम तो शुद्ध परमाणुओं के रूप में ही थे। तो अब हमें शुद्ध करो। वे क्या कहते हैं, हम विश्रसा परमाणु थे और आपने हमें प्रयोगसा बना दिया और उसके परिणाम स्वरूप मिश्रसा हमारा हो गया। मिश्रसा को विश्रसा करना है। यानी शुद्ध परमाणु करना है।' अब और कुछ करने को नहीं रहा है।

(सूत्र-10)

प्रतिक्रमण से क्या होगा कि जागृति बढ़ेगी। यह प्रतिक्रमण करने से बहुत शक्तियाँ

खिलती हैं लेकिन हमारी आज्ञा लेकर करें तो। प्रतिक्रमण करें, उसी को पुरुषार्थ कहते हैं।

यह प्रतिक्रमण करने से बहुत शक्तियाँ खिलती हैं लेकिन हमारी आज्ञा लेकर करें तो।

प्रश्नकर्ता : वह कैसे और कब?

दादाश्री : हमारी आज्ञा लेकर करेगा तो काम निकाल लेगा, खास तौर पर इस यात्रा में। ऐसे संयोगों में भी आज्ञा लेकर करना है।

1973 में हम सब अड़तीस दिन की यात्रा पर गए थे। वहाँ भी हमारा तो नो लॉ (कोई नियम नहीं)। तब फिर ऐसा नहीं कि किसी से लड़ना नहीं है। जिससे भी लड़ना हो उसके साथ लड़ने की छूट। यानी लड़ने की छूट देनी है, ऐसा भी नहीं और नहीं देनी है, ऐसा भी नहीं। यदि वे लड़ते तो 'हम' देखते थे। लेकिन फिर रात को सभी 'हमारी' साक्षी में प्रतिक्रमण करके धो देते थे! आमने-सामने दाग़ लगते और फिर धो देते थे! यह प्योर (शुद्ध) 'वीतराग मार्ग' है, इसलिए यहाँ कैश-नकद प्रतिक्रमण करने पड़ते हैं। इसमें पाक्षिक या मासिक प्रतिक्रमण नहीं होते। दोष हुआ कि तुरंत ही प्रतिक्रमण!

प्रश्नकर्ता : यों तो जागृति है कि 'शुद्धात्मा' हूँ लेकिन फिर भी वह पहले का...

दादाश्री : जो कचरा है न, अगर वह भीतर से नहीं निकलेगा तो भीतर ही रह जाएगा, उसके बजाय निकल जाए तो अच्छा। हम जब यात्रा पर निकले थे न, तब हमारे कुछ पटेल और दूसरे आपके जैसे बनिए थे, वे एक-दूसरे से इतना लड़ते, इतना लड़ते, तो सब मुझे क्या कहते, कि 'दादाजी, इन्हें छुड़वाइए न! ये लोग इतने उल्टे शब्द बोल रहे हैं, बहुत झगड़ रहे हैं'। तब मैंने कहा, 'मेरी हाज़िरी में लड़ रहे हैं तो हल आ जाएगा न! जल्दी से हल आ जाएगा और कुछ बंधेगा नहीं बेचारों का! इसीलिए तो यदि मारपीट कर रहे हों तो भले ही मारे, मारने दो कि 'मारो अच्छे से'। ऐसा कहता कि, 'मारना, अच्छे से'। वह तो, अगर भीतर होगा तभी मारोगे। अगर भीतर होगा ही नहीं, तो कैसे मारोगे?

इस तरह से पूरे दिन बस में तूफान चलता रहता तो ड्राइवर ने मुझसे कहा कि 'साहब, आप तो भगवान जैसे हो। ऐसे लोगों से आपको प्रेम कैसे हो गया?' मैंने कहा, 'ये सब लोग बहुत अच्छे ही हैं। एक दिन सुधरेंगे'!

फिर शाम होते ही सब मिलकर आरती करते, 'दादा भगवान' की, बस में ही! वे मारपीट करते लेकिन वापस सभी मिलकर पूरी आरती गाते। और बाद में प्रतिक्रमण करते थे। वे सब जो मारपीट, लड़ाई-झगड़ा करते थे, वे आमने-सामने पैर छूकर फिर नमस्कार कर लेते थे। तो वह ड्राइवर कहने लगा कि, 'ऐसा तो मैंने दुनिया में कहीं भी नहीं देखा'। तुरंत ही वापस प्रतिक्रमण करते थे। रोज़ एक बार प्रतिक्रमण करते ही थे। जितना लड़ते, उतना ही प्रतिक्रमण करते और वह भी पैर छूकर। देखो, अब है कोई झंझट?

प्रतिक्रमण रूपी साधन देते हैं। हमारी आज्ञा से प्रतिक्रमण करोगे तो तुरंत ही कल्याण हो जाएगा। पाप भुगतने पड़ेंगे लेकिन इतने ज़्यादा नहीं।

प्रश्नकर्ता : जागृति बढ़ाने के लिए प्रतिक्रमण का हथियार अधिक काम आएगा न?

दादाश्री : हाँ, उस हथियार का उपयोग तो करना ही है न! प्रतिक्रमण से क्या होगा कि जागृति बढ़ेगी। प्रतिक्रमण, वह आत्मा नहीं है, वह पौद्गलिक है। लेकिन वह पुरुषार्थ है, जागृति के अधीन है। जागृति, वही पुरुषार्थ है। जागृति रहे तो फिर करना नहीं पड़ता, होता रहता है।

प्रतिक्रमण शुरू हुए मतलब चौथा गुणस्थानक

शुरू हुआ! चौथे में प्रकाश हो जाता है। समकित होने के बाद वह आगे बढ़ता है। फिर चौथे में से पाँचवें में आता है। और ज़्यादा प्रतिक्रमण करते-करते छठे में आता है। बस, वही प्रतिक्रमण करते-करते आगे बढ़ता है।

प्रतिक्रमण करें, उसी को पुरुषार्थ कहते हैं। अंत में प्रतिक्रमण करते-करते शब्दों का पूरा जंजाल कम होता जाएगा, सब कम होता जाएगा अपने आप। नियम से ही सब कम होता जाएगा। कुदरती रूप से सब बंद हो जाएगा। सब से पहले अहंकार जाएगा, बाद में बाकी का सब जाएगा। सब चले जाएँगे अपने-अपने घर।

(सूत्र-11)

ज्ञानी पुरुष की आज्ञा से ये प्रतिक्रमण होते हैं, वे अनंत जन्मों के पापों को जला देते हैं। जादुई असर है यह हमारा, यदि आज्ञानुसार प्रतिक्रमण करता है तो।

हमने कितना धोया तब जाकर बहीखाता खाली हुआ था। हम कितने ही काल से धोते हुए आ रहे हैं तब जाकर बहीखाता खाली हुआ। आपको तो मैंने रास्ता दिखाया है। इसलिए जल्दी छूट जाओगे। हम तो कितने काल से खुद ही धोते आए थे।

आपको तो प्रतिक्रमण कर लेना है। यानी आप ज़िम्मेदारी में से छूट गए। मुझ पर शुरू-शुरू में सब लोग 'अटैक' करते थे न? लेकिन बाद में सब थक गए। यदि अपना विरोध होगा तो सामने वाले नहीं थकेंगे। यह जगत् किसी को भी मोक्ष में जाने दे ऐसा नहीं है, ऐसी बुद्धि वाला जगत् है। इसमें सचेत होकर चलें, समेटकर चलें तो मोक्ष में जाएँगे।

यह प्रतिक्रमण करके तो देखो! फिर आपके घर के व्यक्तियों में सब में चेन्ज हो जाएगा, जादुई चेन्ज हो जाएगा। जादुई असर!

यहाँ मार खाकर पड़े रहना अच्छा और वहाँ माल खाकर भी पड़े रहना गलत है। जगह अच्छी-बुरी है, वह देख लेना चाहिए न?

प्रश्नकर्ता : आपने मुझे प्रतिक्रमण दिया था, जब यह पैर वैसा हो गया था न तब, लेकिन दो दिन तक उसका जादुई असर था, उस प्रतिक्रमण का।

दादाश्री : हमने आशीर्वाद भेजे थे।

प्रश्नकर्ता : उसका बहुत जादुई असर हुआ था, दो दिन में।

दादाश्री : जादुई असर है यह हमारा, यदि आज्ञानुसार प्रतिक्रमण करता है तो। भगवान नहीं कर सकते उतना काम यह कर सकता है।

प्रश्नकर्ता : हम जो प्रतिक्रमण करते हैं, उस प्रतिक्रमण का परिणाम, इस मूल सिद्धांत पर है कि हम सामने वाले के शुद्धात्मा को देखते हैं तो उसके प्रति जो बुरा भाव है, वह कम हो जाता है न?

दादाश्री : अपने बुरे भाव खत्म हो जाते हैं। अपने खुद के लिए ही है यह सब। सामने वाले को लेना-देना नहीं है। सामने वाले को शुद्धात्मा देखने का इतना ही हेतु है कि हम शुद्ध दशा में, जाग्रत दशा में हैं।

प्रश्नकर्ता : तो उसे हमारे प्रति जो बुरा भाव है, वह कम होता है न?

दादाश्री : नहीं, कम नहीं होता। आप प्रतिक्रमण करते हो तो होता है। शुद्धात्मा देखने से नहीं होता लेकिन प्रतिक्रमण करोगे तो होगा।

प्रश्नकर्ता : हम प्रतिक्रमण करते हैं तो सामने वाले के आत्मा को असर होता है या नहीं?

दादाश्री : होता है न, असर होता है। देखने पर भी फायदा होता है, लेकिन तुरंत फायदा

नहीं होता। फिर धीरे-धीरे-धीरे होता है! क्योंकि शुद्धात्मा की तरह किसी ने देखा ही नहीं है। अच्छे व्यक्ति और बुरे व्यक्ति, उसी तरह देखा है।

इन महात्माओं को हमने कुछ और ही प्रकार की चीज़ हाथ में दी है! आश्चर्यजनक है! दुनिया के लोगों को एक्सेप्ट (स्वीकार) करना पड़ेगा कि ये लड़ रहे होते हैं फिर भी उनके अंदर का समकित चला नहीं जाता। दोनों क्षेत्रों की धाराएँ अलग ही बहती रहती हैं।

यह आपकी (ज्ञान न लिया हो) तो दोनों ही धाराएँ एक साथ बहती रहती है। आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान के बिना दोनों धाराएँ अलग रहती ही नहीं। 'इन सब को' (ज्ञान लिया हो) तो निरंतर आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान रहा करता है। यह कैसा है, कि बाहर की क्रिया होती रहती है और भीतर आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान भी होते रहते हैं, वे निरंतर होने चाहिए।

यह हमारा मुखारविंद धारण करके, आलोचना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान करो तब तो ऐसा मिट जाएगा कि फिर से वह अतिक्रमण होगा ही नहीं, हमारी हाज़िरी से धुल जाता है।

(सूत्र-12)

यदि बाघ के 'प्रतिक्रमण' किए जाएँ तो बाघ भी हमारे कहे अनुसार काम करने लगेगा। 'बाघ' और 'मनुष्य' में कोई फर्क नहीं है। फर्क आपके स्पंदनों का है! इसलिए उस पर असर होता है।

प्रश्नकर्ता : आप्तसूत्र में है न कि 'यदि आप बाघ का प्रतिक्रमण करते हो तो बाघ भी उसका हिंसक भाव भूल जाता है', तो वह क्या है?

दादाश्री : हाँ, बाघ अपना हिंसक भाव भूल जाता है यानी यहाँ पर अपना भय छूट जाता है।

प्रश्नकर्ता : अपना भय छूट जाता है वह ठीक है, लेकिन उसके आत्मा को कुछ होता है या नहीं?

दादाश्री : कुछ भी नहीं होता। अपना भय छूटा कि वह छूट गया।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उसका हिंसक भाव चला जाता है, ऐसा आपने कहा न?

दादाश्री : वह हिंसक भाव चला जाता है।

प्रश्नकर्ता : वह कैसे जाता है?

दादाश्री : अपना भय छूट गया कि हिंसक भाव चला जाता है।

प्रश्नकर्ता : तो उसका अर्थ यह हुआ न, कि उसके आत्मा को असर हुआ?

दादाश्री : आत्मा को सीधा असर होता है। आत्मा को तो असर होता ही है, असर पहुँचता है सारा।

यदि बाघ के प्रतिक्रमण करेंगे तो बाघ भी अपने कहे अनुसार काम करेगा। बाघ में और मनुष्य में कुछ फर्क नहीं है। फर्क आपके स्पंदनों का है। जिनका उस पर असर होता है। 'बाघ हिंसक है', ऐसा आपके मन में ख्याल हो, तब तक वह खुद हिंसक ही रहेगा और 'बाघ में शुद्धात्मा है', ऐसा ख्याल रहे तो वह शुद्धात्मा ही है और अहिंसक हो जाएगा। सबकुछ हो सके, ऐसा है।

हम सामने वाले के किस आत्मा की बात करते हैं? प्रतिक्रमण करते हैं, वह जानते हो? प्रतिष्ठित (आत्मा) का नहीं करते हैं, आप उसके मूल शुद्धात्मा का (प्रतिक्रमण) करते हैं। यह तो उसके शुद्धात्मा की हाज़िरी में उसके साथ जो हुआ उसका हम प्रतिक्रमण करते हैं। यानी उस शुद्धात्मा के प्रति हम क्षमा माँगते हैं।

ये सारे अपने ही परिणाम हैं। आप आज से किसी के लिए स्पंदन करना, किसी के बारे में किंचित्मात्र सोचना बंद कर दो। विचार आएँ तो प्रतिक्रमण करके धो देना। यदि पूरा दिन किसी स्पंदन बगैर बीता, इस तरह दिन बीता तो बहुत हो गया, वही पुरुषार्थ है।

प्रतिक्रमण से सामने वाले की परिणति बदलती है। ऐसा लोगों को अनुभव होता है। इसलिए फिर छोड़ते नहीं न! 'दिस इज़ द कैश (नकद) बैंक।' प्रतिक्रमण, वह तो 'कैश बैंक' कहलाता है, तुरंत फल देने वाला। आपको ज़्यादा प्रतिक्रमण करने पड़ते हैं न?

(सूत्र-13)

एक घंटे शुद्धात्मा पद में बैठकर प्रतिक्रमण करो तो स्वसत्ता का अनुभव होता है।

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण करते हैं तो सामने वाले को पहुँचता है?

दादाश्री : सामने वाले व्यक्ति को पहुँचता है। वह नरम होता जाता है। उसे पता चले या ना चले, उसका हमारे प्रति जो भाव है, वह नरम होता जाता है। अपने प्रतिक्रमण का तो बहुत असर होता है। एक घंटा यदि करो तो सामने वाले में बदलाव आ जाता है, यदि साफ हुए होंगे तो। जहाँ भी हम जिनके प्रतिक्रमण करते हैं तो वे हमारे दोष तो नहीं देखते लेकिन हमारे लिए उन्हें मान होता है।

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण करेंगे तो नया 'चार्ज' नहीं होगा?

दादाश्री : यदि आत्मा कर्ता होता है तो कर्म बंधता है। प्रतिक्रमण आत्मा नहीं करता है, चंदूभाई करेंगे और आप उसके ज्ञाता-द्रष्टा रहो।

निज स्वरूप की प्राप्ति के बाद यथार्थ प्रतिक्रमण होते हैं। प्रतिक्रमण करने वाला चाहिए, प्रतिक्रमण करवाने वाला चाहिए।

हमारा प्रतिक्रमण अर्थात् क्या? कि चरखी खोलते समय जितने टुकड़े हों उन्हें जोड़कर साफ कर दें, वह हमारा प्रतिक्रमण है।

प्रश्नकर्ता : चारित्रमोह देखने में भूल हो जाती है क्या? रोज़ प्रतिक्रमण करते हैं और फिर वही की वही भूल करते हैं या नहीं करते?

दादाश्री : जो भूलें हर रोज़ होती हैं, उन्हें पहचान लेना है, वही सही है। प्रतिक्रमण करने पर भी नहीं मिटती। (लेकिन) एक-एक परत टूटती जाती है।

अब आत्मा प्राप्त होने के बाद में क्या? जितना-जितना शुद्ध उपयोग रहेगा, उतनी स्वसत्ता उत्पन्न होगी और संपूर्ण स्वसत्ता उत्पन्न हो गई तो वह भगवान हो गया! *पुद्गल,* वह परसत्ता में है। और (व्यवहार) आत्मा भी, जब तक स्वरूप का ज्ञान नहीं हो जाता, तब तक परसत्ता में ही है। ज्ञानी मिल जाएँ और (व्यवहार) आत्मा स्वसत्ता में आ जाए, उसके बाद फिर *पुद्गल* का ज़ोर नरम पड़ता है अथवा वह मृतप्राय हो जाता है। जैसे-जैसे पुरुषार्थ बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे *पुद्गल* नरम पड़ता जाता है। एक घंटा शुद्धात्मा पद में बैठकर प्रतिक्रमण करो तो स्वसत्ता का अनुभव होगा। प्रतिक्रमण यदि तुरंत ही नकद हो जाए तो भगवान पद में आ जाए, ऐसा है।

किसी दिन अकेले बैठे हों और प्रतिक्रमण या ऐसा कुछ करते-करते-करते भीतर थोड़ा आत्मा का अनुभव हो जाए, उसका स्वाद आ जाए, वह अनुभव कहलाता है।

(सूत्र-14)

यह आप प्रतिक्रमण करने बैठो न, तो

एक तरफ अमृत की बूंदें गिरती रहती है और आप हल्के हुए ऐसा (अनुभव) होता है।

यह अपूर्व बात है, पूर्व में सुनी ना हो, पढ़ी ना हो, जानी ना हो, वैसी बातें जानने के लिए यह मेहनत है।

हम यहाँ प्रतिक्रमण करवाने के लिए बैठाते हैं, उसके बाद क्या होता है? अंदर दो घंटे प्रतिक्रमण करवाते हैं न, कि बचपन से लेकर अभी तक सभी जो-जो दोष हुए हैं, उन सब को याद कर-करके प्रतिक्रमण कर डालो, सामने वाले के शुद्धात्मा को देखकर, ऐसा कहते हैं। अब छोटी उम्र से जब से समझ शक्ति की शुरुआत होती है, तब से प्रतिक्रमण करने लगता है, तो अभी तक का प्रतिक्रमण करता है। इस तरह प्रतिक्रमण करता है उसके सभी बड़े-बड़े दोष भी समा जाते हैं। बाद में फिर से प्रतिक्रमण करता है। तब फिर उससे भी छोटे-छोटे दोष भी आ जाते हैं। वापस फिर से प्रतिक्रमण करता है तो उससे भी छोटे-छोटे दोष आ जाते हैं, इस तरह उन दोषों का पूरा ही भाग खत्म कर देता है।

दो घंटे के प्रतिक्रमण में ही ज़िंदगी भर के पिछले सारे दोषों को धो देना है। और फिर कभी भी ऐसे दोष नहीं करूँगा ऐसा निश्चय करना है यानी कि प्रत्याख्यान हो गया।

यह आप प्रतिक्रमण करने बैठो न, तो एक तरफ अमृत की बूंदें गिरती रहती है और आप हल्के होते जाते हैं। भाई तुझसे होते हैं, प्रतिक्रमण? (दोष) हल्के हुए ऐसा लगता है? आपके प्रतिक्रमण शुरू हो गए है न बहुत? बड़ी तेज़ी से चल रहे हैं? सब खोज-खोजकर प्रतिक्रमण करना है। जाँच करने लगना है। वह सब याद भी आता जाएगा। रास्ता भी दिखेगा। आठ साल की उम्र में किसी को लात मारी हो वह भी दिखेगा। वह रास्ता दिखेगा, लात भी दिखेगी। याद कैसे आया यह सब? यों याद करते हैं तो कुछ याद नहीं आता और प्रतिक्रमण करने बैठें कि तुरंत लिंकबद्ध (क्रमबद्ध) याद आ जाता है। एकाध बार भी सारी ज़िंदगी का किया था आपने?

प्रश्नकर्ता : किया था।

दादाश्री : फिर से करने को किसी ने मना किया है क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं, अभी फिर से करने लगे थे। एक दिन सब बैठे थे।

दादाश्री : यह तो घर पर भी करना हो तो भी आप कर सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : दादा, आज पहली बार सामायिक में बैठ पाया, बहुत आनंद आया।

दादाश्री : यानी सब के प्रतिक्रमण करना, घर वालों के तो रोज़ ही, फिर अपने नज़दीकी रिश्तेदारों के, जिनको दुःख दिया हो पहले उन सब के प्रतिक्रमण करने हैं, याद आते हैं या नहीं आते?

प्रश्नकर्ता : आते हैं न! रोज़ सामायिक में बैठकर करते रहना है।

दादाश्री : प्रतिक्रमण करने से तुझे ऐसा भीतर विश्वास बैठ गया कि अब यह अनुभव अच्छा हुआ है?

प्रश्नकर्ता : दादा, पहले कैसा था कि प्रतिक्रमण करता था न, तो मुझे ऐसा ही लगता था कि मेरा दोष नहीं है और झूठ-मूठ का क्या प्रतिक्रमण करना है?

दादाश्री : नहीं, लेकिन अब?

प्रश्नकर्ता : अब समझ में आता है।

दादाश्री : आज आनंद हुआ?

प्रश्नकर्ता : हाँ, क्या भूल हो गई वह समझ में आया। पहले तो वह समझ में ही नहीं आता था। अब थोड़े समय से समझ में आने लगा है।

दादाश्री : जब मूल भूल समझ में आएगी न, तब बहुत आनंद होगा, प्रतिक्रमण से। यदि आनंद नहीं हुआ तो प्रतिक्रमण करना नहीं आया। अतिक्रमण से यदि (खुद को) दु:ख नहीं होता तो वह मनुष्य, मनुष्य नहीं है।

प्रश्नकर्ता : मूल भूल कौन सी, दादा?

दादाश्री : पहले भूल ही नहीं दिखती थी न! अब दिखती है, वह स्थूल दिखती है। अभी तो आगे दिखेगी।

प्रश्नकर्ता : सूक्ष्म, सूक्ष्मतर...

दादाश्री : भूलें दिखती जाएँगी। यह तो अजाग्रतता। ऊपर का देह दिखा। भीतर कैसे हैं वह कैसे मालूम पड़ेगा? वे दोनों बहनें बाहर से गोरी-चिट्टी हैं, भीतर कैसी हैं, वह कैसे मालूम होगा? अत: भीतर का देखने पर मूल भूल समझ में आती है। समझ में आता है तुझे?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : यह गुड़िया जितना शरीर, चने जितनी नाक लेकिन यह देखो न, कितनी समझ भरी हुई है!

(सूत्र-15)

आत्मा अनंत शक्ति वाला है, उसकी वह प्रज्ञाशक्ति पाताल फोड़कर दिखाती है। इस प्रतिक्रमण से तो खुद को पता चलता है कि हल्का हो गया।

अपने यहाँ दो-तीन घंटे प्रतिक्रमण करता है, तो दो-तीन घंटे तक तो दोष ही दिखाई देते हैं। इसे जीवंत प्रतिक्रमण कहते हैं। जब यह प्रतिक्रमण करने बैठे न, तब तो शुद्धात्मा ही हो जाता है। एक बार प्रतिक्रमण करने बैठे कि फिर तो प्रतिक्रमण होते ही रहते हैं न? आपको नहीं करने हों तो भी होते रहते हैं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, फिर होते रहते हैं।

दादाश्री : मैंने कहा, 'बंद कर दो अब तो?'

प्रश्नकर्ता : तो चरखी चालू ही रहती है।

दादाश्री : कौन चलाता है वह? तब कहते हैं, 'शुद्धात्मा' प्राप्त हुआ है, यह सब क्रिया प्रज्ञा की है। जब आप पूरी ज़िंदगी के प्रतिक्रमण करते हो, तब आप न तो मोक्ष में और न ही संसार में। ऐसे तो आप प्रतिक्रमण के समय पिछले सभी दोषों का पूरा विवरण करते हों। मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार सब के फोन-वोन बंद होते हैं, अंत:करण बंद होता है। उस समय सिर्फ प्रज्ञा ही काम करती है। आत्मा भी इसमें कुछ नहीं करता। यह दोष हुआ फिर ढक जाता है। फिर दूसरी लेयर (परत) आती है। इस तरह लेयर पर लेयर आती जाती है। फिर मृत्यु के समय अंतिम एक घंटे में इन सभी का सारांश (बहीखाता) आता है।

भूतकाल के सभी दोष वर्तमान में दिखाई दें, वह ज्ञानप्रकाश है, वह मेमोरी (स्मृति) नहीं है।

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण से आत्मा पर इफेक्ट (असर) होता है क्या?

दादाश्री : आत्मा पर तो कोई भी इफेक्ट स्पर्श ही नहीं करता। यदि इफेक्ट हो तो संज्ञी कहलाएगा। यह तो आत्मा है, वह हंड्रेड परसेन्ट डिसाइडेड (सौ प्रतिशत तय) है। जहाँ मेमोरी नहीं पहुँचती वहाँ आत्मा के प्रभाव से होता है। आत्मा अनंत शक्ति वाला है, उसकी वह प्रज्ञाशक्ति पाताल फोड़कर दिखाती है।

प्रतिक्रमण करने के लिए वह व्यक्ति

सामने न मिले तो भी हर्ज नहीं है। इसमें रूबरू हस्ताक्षर की ज़रूरत नहीं है। जैसे इस कोर्ट में रूबरू हस्ताक्षर की ज़रूरत है, ऐसी यहाँ ज़रूरत नहीं है। क्योंकि ये गुनाह रूबरू नहीं हुए हैं। ये गुनाह तो लोगों की गैरहाज़िरी में हुए हैं। यों लोगों की हाज़िरी में हुए हैं, लेकिन रूबरू में हस्ताक्षर नहीं किए हैं। हस्ताक्षर अंदर के हैं, राग-द्वेष के हस्ताक्षर हैं। इस प्रतिक्रमण से तो खुद को हल्केपन का पता चलता है, कि अब हल्का हो गया और बैर छूट जाते हैं, नियम से छूट ही जाते हैं।

अभी तो जैसे-जैसे शक्ति बढ़ेगी, वैसे-वैसे दोष दिखते जाएँगे। अभी तो स्थूल दोष दिखेंगे, फिर सूक्ष्म दिखेंगे। जितने दिखे उतने गए। नियम ऐसा है कि अपने अंदर जो दोष हैं, वे जितने दिखाई देंगे, उतने चले जाएँगे।

यह आलोचना-प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान का मार्ग है, 'शूट ऑन साइट'। रोज़ाना तीन सौ-तीन सौ भूलें, चार सौ-चार सौ भूलें दिखाई देंगी। खुद की एक भी भूल जिसे दिखाई दे, वह भगवान हो जाता है। यदि मनुष्यों में दोष नहीं होते तो सब जगह भगवान ही होते! जो व्यक्ति दोष रहित हुआ, वह भगवान कहलाता है!

(सूत्र-16)

किसी को रोज़ाना पच्चीस दोष दिखाई देते हैं, किसी को पचास दिखाई देते हैं, किसी को सौ दिखाई देते हैं। पाँच सौ-पाँच सौ दोष दिखाई दें, ऐसी दृष्टि खिल जाती है, दर्शन खुलता जाता है।

प्रश्नकर्ता : कई लोग ऐसा कहते हैं कि, मैंने दो सौ-(पाँच सौ) प्रतिक्रमण किए, तो वह प्रतिक्रमण की क्रिया समझाइए न! वे कैसे करते हैं?

दादाश्री : ऐसा है न, जैसे-जैसे गहराई में उतरते जाते हैं न, वैसे-वैसे खुद के और भी अधिक दोष दिखाई देते हैं।

प्रश्नकर्ता : मुझे तो मेरे ही दोष दिखाई देते हैं।

दादाश्री : वह तो अब ज्ञान दिया है इसलिए, वर्ना पहले कहाँ दिखते थे? अब दिखाई देते हैं न? अब ये जो दिखाई देते हैं, उनके लिए माफी माँगनी पड़ेगी। प्रतिक्रमण करने पर दोष दिखाई देने लगते हैं। किसी को रोज़ाना पच्चीस दोष दिखाई देते हैं, किसी को पचास दिखाई देते हैं, किसी को सौ दिखाई देते हैं। पाँच सौ-पाँच सौ दोष दिखाई दें, ऐसी दृष्टि खिल जाती है, दर्शन खुलता जाता है।

आपके साथ बातचीत करते समय (कभी) सख्ती से बात कर लेते हैं। लेकिन साथ-साथ उन्हें दोष भी दिखाई देता है कि यह गलत हो गया। तुम्हें दोष दिखाई देते हैं या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, मुझे मेरे दोष दिखाई देते हैं।

दादाश्री : फिर तो कल्याण ही हो गया न!

प्रतिक्रमण तो अपने महात्मा कैसा करते हैं? पट, पट, पट हुआ कि तुरंत ही! 'शूट ऑन साइट' प्रतिक्रमण करते हैं। इसलिए फिर दोष ही खड़ा नहीं होता न!

जैसे-जैसे दोषों का प्रतिक्रमण करते जाते हैं, वैसे-वैसे दोष ज़्यादा दिखते जाते हैं। बाद में तो कितनों को दो सौ-दो सौ दिखते जाते हैं। एक भाई कहते हैं, किस तरह दादा पहुँच पाऊँगा? मेरा दिमाग़ थक जाता है। पाँच सौ-पाँच सौ, हज़ार प्रतिक्रमण करता हूँ फिर भी कम नहीं होता! क्योंकि माल भी ऐसा ही भरा हुआ है न! इन बेचारों के पास माल ही कहाँ है, छोटी-छोटी दुकानें खोली थीं जबकि उनके बड़े गोडाउन भरे थे, लेकिन बहुत खाली कर दिया है।

प्रश्नकर्ता : इन महात्माओं को तो कुछ भी हुआ कि तुरंत ही प्रतिक्रमण के भाव आते हैं।

दादाश्री : तुरंत ही, अपने आप ही आते हैं। सहज रूप से हो जाता है।

आपके कितने प्रतिक्रमण होते हैं?

नीरू बहन : रोज़ के पाँच सौ हो जाते हैं।

दादाश्री : 'ये' बहन रोज़ पाँच सौ-पाँच सौ प्रतिक्रमण करती है! कोई पचास करता है, कोई सौ करता है, जितनी-जितनी जागृति बढ़ती है, उतने प्रतिक्रमण करता है। लेकिन निरंतर प्रतिक्रमण करने का मार्ग है यह।

प्रश्नकर्ता : आपने जो कहा कि रोज़ पाँच सौ प्रतिक्रमण होते हैं, तो जितने ज़्यादा प्रतिक्रमण हों, वह अच्छा या जितने कम प्रतिक्रमण हों, वह अच्छा?

दादाश्री : जितने ज़्यादा हों वह अच्छा। निरे दोष के ही भंडार हैं। कृपालुदेव ने कहा है कि, *'हुं तो दोष अनंतनुं, भाजन छुं करुणाळ'*। फिर *'दीठा नहीं निज दोष, तो तरीये कोण उपाय?'* यह तो, पाँच दोष तो दिखते नहीं हैं, तो कैसे तैर पाएँगे? पूर्णत: दोष का भाजन है। अत: पाँच सौ-पाँच सौ दोष जिनके निकलते हैं उनका जल्दी साफ हो जाता है। किसी के पचास-पचास निकलते हैं, किसी के सौ-सौ निकलते हैं, लेकिन दोष निकलने लगे हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन जैसे उर्ध्वीकरण शुरू होता है कि दोष कम होते जाते हैं न, बाद में?

दादाश्री : नहीं, उर्ध्वीकरण की कोई ज़रूरत नहीं है। दोष तो जितनी अधिक जागृति कि तुरंत ही पकड़ में आ जाते हैं और दोष पकड़ में आए कि तुरंत ही उसका वहाँ पर प्रतिक्रमण कर देना है। आलोचना-प्रतिक्रमण व प्रत्याख्यान, तुरंत ही 'ऑन द मोमन्ट' कर देना है! 'शूट ऑन साइट'!

प्रश्नकर्ता : ये जितने-जितने प्रतिक्रमण होते जाते हैं, फिर कुछ अवस्था आने पर तो प्रतिक्रमण कम होते जाते होंगे न? बढ़ कैसे जाते हैं बाद में?

दादाश्री : वह तो कम होते-होते काफी टाइम लग जाएगा। क्योंकि यह सारा अनंत अवतार का माल भरा हुआ है।

ये नीरू बहन हैं, इनके सब आचार-विचार जो हैं, वे किस तरह उच्च हैं? तो कहते हैं, हर रोज़ पाँच सौ-पाँच सौ प्रतिक्रमण करती हैं कई सालों से। इसलिए अब उनका परिणाम आने लगा है। और कुछ करना नहीं है, यह आज्ञा ही लेना है और 'शूट ऑन साइट' प्रतिक्रमण करते रहना है। भीतर कोई आए और आपके मन में ऐसा हो कि, 'इतनी भीड़ में ये कहाँ आ टपके?' ऐसा कहकर आपने उनके प्रति विराधना की, इसलिए उनके आत्मा ने भीतर यह सब जान लिया। यानी आपको तुरंत ही कहना है कि, 'चंदूभाई, ऐसी भावना क्यों की? अतिक्रमण किया, इसलिए प्रतिक्रमण करो'।

यह प्रतिक्रमण यानी 'शूट ऑन साइट'। 'शूट ऑन साइट' यानी दोष होते ही उसका निवारण कर देना है, तुरंत ही 'ऑन द मोमेन्ट!' जागृति इतनी अधिक रहती है कि 'शूट ऑन साइट' किए बगैर नहीं रहता। एक भी दोष दिखे बगैर नहीं रहता है। तब जाकर व्यक्ति के दोष खाली हो जाते हैं। यह एक ही मार्ग ऐसा है कि खुद के दोष दिखते जाते हैं और शूट (खत्म) होते जाते हैं, ऐसा करते-करते दोष खत्म होते जाते हैं।

यह मैंने आपको जो हथियार दिया है, यह प्रतिक्रमण, वह बड़ा हथियार दिया है। क्योंकि पूरे संसार का अंत लाने का सब से बड़ा हथियार यही

है। अतिक्रमण से जगत् खड़ा हुआ है और प्रतिक्रमण से जगत् का विलय हो जाता है। बस यही है।

इतना उत्तम विज्ञान हाथ में आने के बाद कौन छोड़ेगा? पहले तो पाँच मिनट भी उपयोग में नहीं रहा जाता था। एक गुणस्थानक सामायिक करनी हो तो बहुत कष्ट के बाद रह पाते थे और यह तो सहज ही, आप जहाँ जाओ वहाँ उपयोगपूर्वक रह सकते हो, ऐसा हो गया है!

प्रश्नकर्ता : वह समझ में आता है, दादा।

दादाश्री : अब ज़रा भूलों को रोको, यानी कि प्रतिक्रमण करो। आपको निश्चित करके निकलना है कि आज इतना करना है, शुद्ध उपयोग में रहना है। ऐसा निश्चित नहीं करेंगे तो फिर उपयोग चूक जाएँगे और अपना विज्ञान तो बहुत उत्तम है। और कोई झंझट ही नहीं।

आपको ऐसा लगेगा कि यह तो हम उपयोग चूककर उल्टे रास्ते चले हैं। यानी उपयोग चूके, उसका प्रतिक्रमण करना पड़ेगा। उल्टा रास्ता यानी वेस्ट ऑफ टाइम एन्ड एनर्जी (समय और शक्ति का बिगाड़) होता है, फिर भी उसके प्रतिक्रमण नहीं करोगे तो चलेगा। उसमें इतना ज़्यादा नुकसान नहीं है। एक जन्म अभी बाकी है इसलिए लेट गो किया है (जाने दिया है)। लेकिन जिसे उपयोग में अधिक रहना हो, उसे उपयोग चूके उसका प्रतिक्रमण करना होगा। प्रतिक्रमण यानी वापस लौटना। कभी वापस लौटा ही नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण करने से आगे जाकर अच्छा प्रतिबिंब पड़ता है?

दादाश्री : वाकई में, सब क्लियर हो जाता है। दर्शन साफ हो जाता है व दर्शन बढ़ता है। बिना प्रतिक्रमण के कोई मोक्ष में नहीं गया। प्रतिक्रमण करने से खुद के दोष कम हो जाते हैं और धीरे-धीरे खत्म हो जाते हैं।

(सूत्र-17)

जैसे-जैसे दोष दिखते हैं, वैसे-वैसे उनकी परतें उखड़ती जाती हैं और जब उनकी सारी परतें उखड़ जाती हैं, तब वह दोष जड़-मूल से, सदा के लिए बिदा ले लेता है।

प्रश्नकर्ता : दादा, दोष दिखाई देने बंद हो जाएँ ऐसा कीजिए न।

दादाश्री : नहीं, अरे, वे दोष तो दिखेंगे ही! दोष दिखाई देते हैं इसीलिए तो यह आत्मा है और वह ज्ञेय है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन क्या ऐसा नहीं हो सकता कि दिखाई ही नहीं दें?

दादाश्री : नहीं, (दोष) यदि दिखाई ही नहीं देंगे तब तो आत्मा चला जाएगा। आत्मा है तो दोष दिखाई देता है। लेकिन अब वे दोष नहीं हैं, वे ज्ञेय हैं और आप ज्ञाता हो।

वे भूलें फिर ज्ञेय स्वरूप में दिखती हैं। जितने ज्ञेय दिखते हैं उतनों से मुक्त हुआ जाता है। ये प्याज़ की परतें होती हैं न, वैसे दोष भी परतों वाले होते हैं। इसलिए जैसे-जैसे दोष दिखते हैं, वैसे-वैसे उनकी परतें उखड़ती जाती हैं और जब उनकी सारी परतें उखड़ जाती हैं, तब वह दोष जड़-मूल से सदा के लिए बिदा ले लेता है। कुछ दोष एक परत वाले होते हैं। दूसरी परत ही उनकी होती नहीं है, इसलिए उन्हें एक ही बार देखने से चले जाते हैं। अधिक परतों वाले दोषों को बार-बार देखना पड़ता है और प्रतिक्रमण करें तो जाते हैं और कुछ दोष तो इतने चिकने होते हैं कि उनका बार-बार प्रतिक्रमण करते रहना पड़ेगा और लोग कहेंगे कि वही का वही दोष होता है? तब कहते हैं कि भाई हाँ, पर उसका कारण उन्हें यह समझ में नहीं आता! दोष तो परत के समान

हैं, अनंत हैं। इसलिए जो सब दिखें और उनके प्रतिक्रमण करें, तो साफ होते जाते हैं।

(सूत्र-18)

जगत् सारा निर्दोष है ही, लेकिन निर्दोष दिखता नहीं है, उसका क्या कारण है? वह आपके अटैक वाले स्वभाव के कारण है। यदि अटैक करना भूल जाएगा तो फिर प्रतिक्रमण करना भूल जाएगा।

प्रश्नकर्ता : दादा, सामने वाले के दोष क्यों दिखते हैं?

दादाश्री : खुद की भूल के कारण ही सामने वाला दोषित दिखता है। इन दादा को सब निर्दोष ही दिखते हैं। क्योंकि अपनी सारी भूलें उन्होंने मिटा दी हैं। खुद का ही अहंकार सामने वाले की भूलें दिखाता है। जिसे खुद की ही भूल देखनी है, उसे सभी निर्दोष ही दिखेंगे।

(यह जगत्) सारा निर्दोष ही हैं। दोषित दिखता है, वही अपना दोष है। किसी जीव का दोष है ही नहीं। ऐसा दिखा तो ज्ञान कहलाता है, पर ऐसा दिखता नहीं न!

प्रश्नकर्ता : दोषित देखना नहीं है, फिर भी दोषित दिखें, वह डिस्चार्ज कहलाता है न?

दादाश्री : डिस्जार्च। डिस्चार्ज टु बी हैबिच्युएटेड। खुद की सत्ता नहीं वह हैबिच्युएटेड कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : दोषित दिखें, तो वह डिस्चार्ज किस तरह कहलाएगा?

दादाश्री : दोषित देखने का भाव छूट गया, इसलिए डिस्चार्ज कहलाएगा न! पर उसने पूरी तरह से आज्ञा पाली नहीं। वह धीरे-धीरे आज्ञा का पालन करता जाएगा, वैसे-वैसे शुद्ध होता जाएगा। तब तक उसका प्रतिक्रमण करना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : पर बेसिकली (मूल रूप से) ऐसा फिट हो गया है कि निर्दोष ही है। पर कभी कभार दोषित दिख जाता है।

दादाश्री : इसलिए ही वह हैबिच्युएटेड है, कहा है न! नहीं करना हो फिर भी हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : हम लोगों की दृष्टि अभी भी निर्दोष क्यों नहीं होती?

दादाश्री : दृष्टि निर्दोष ही है।

प्रश्नकर्ता : निर्दोष ही दिखना चाहिए, ऐसा भाव है, पर फिर भी दूसरों के दोष दिखते हैं।

दादाश्री : दोष दिखते हैं, वे जिसे दिखते हैं न, उसे आप 'देखते' हैं, बस। बाकी, जैसा माल भरा हुआ है, वैसा ही निकलेगा न?

प्रश्नकर्ता : पर उसका प्रतिक्रमण करना पड़ेगा न?

दादाश्री : प्रतिक्रमण करना ही पड़ेगा न! किसलिए ऐसा माल भरा था?

प्रश्नकर्ता : पुराने दोषों के प्रतिक्रमण कब तक करने हैं?

दादाश्री : जब तक दोष बाकी हैं तब तक। और यदि अपने दोषों की वजह से सामने वाले को दुःख हो जाए, ऐसा हो, तब ही कहना है कि, 'चंदूलाल, इनके प्रतिक्रमण करो'। वर्ना करने की ज़रूरत नहीं है।

प्रश्नकर्ता : महात्माओं की ऐसी स्टेज कब आएगी कि प्रतिक्रमण करना पूर्ण हो जाएगा?

दादाश्री : यदि अटैक करना भूल जाएगा तो फिर प्रतिक्रमण करना भूल जाएगा।

जगत् सारा निर्दोष है ही, लेकिन निर्दोष दिखता नहीं है, उसका क्या कारण है? वह

आपके अटैक वाले स्वभाव के कारण है। आपको गालियाँ दें वह भी निर्दोष है, मार मारे वह भी निर्दोष है। नुकसान करे वह भी निर्दोष है। क्योंकि आपका हिसाब ही है यह सब। आपका हिसाब आपको वह वापस दे रहा है। वह आप वापस फिर उसे देते हैं तो फिर नया हिसाब बाँधते हैं। आप 'व्यवस्थित' मानें, तो फिर बस। कह देना कि, 'लो, हिसाब साफ, चुकता हो गया।' निर्दोष देखोगे, तो मोक्ष होगा। दोषित देखा, तब तो फिर आपने आत्मा देखा ही नहीं। सामने वाले में यदि आप आत्मा देखो तो वह दोषित नहीं है।

ज्ञानी पुरुष के ज्ञान देने के बाद, दिव्यचक्षु देने के बाद खुद को खुद के सर्व दोष दिखते हैं। ज़रा-सा मन बदलाव हुआ हो, तो भी पता चल जाता है कि यह दोष हुआ। यह तो वीतराग मार्ग, एक अवतारी मार्ग है। यह तो बहुत जिम्मेदारी वाला मार्ग है। एक अवतार में सब शुद्ध ही हो जाना चाहिए। यहाँ पहले शुद्ध हो जाना चाहिए।

(सूत्र-19)

यह तो आसान मार्ग है। तुरंत ही चाबियों से ताले खुल जाते हैं! ऐसा संयोग अन्य किसी काल में नहीं मिलेगा। यह तो अक्रम मार्ग है! एक्सेप्शनल (अपवाद) केस है! और ग्यारहवाँ आश्चर्य है! यहाँ काम निकाल लेना। ऐसे प्रतिक्रमण से लाइफ (जिंदगी) भी सुंदर गुज़रती है और मोक्ष में जाते हैं!

प्रश्नकर्ता : एक जन्म देखते ही रहना है, तो क्या प्रतिक्रमण करते-करते देखते रहना है?

दादाश्री : निरंतर ध्यान रहना चाहिए कि मैं कुछ भी नहीं करता। यदि निरंतर ऐसा ध्यान रहे तो फिर प्रतिक्रमण नहीं करेंगे तो भी चलेगा। हमें निरंतर रहता है। जो हमें रहता है, वही आपको बता रहे हैं। हमें हमेशा रहता है, ज्ञान होने के बाद।

बाकी, इस ज्ञान में तो प्रतिक्रमण करना रहता ही नहीं। यह ज्ञान ऐसा अंतिम प्रकार का ज्ञान है कि जिसमें प्रतिक्रमण करना रहता ही नहीं। लेकिन यह तो, जिसे गुजराती की चार किताबें पढ़नी आती हों, उसे ग्रेज्युएट (स्नातक) बना देते हैं, तो फिर बीच के स्टैन्डर्ड (कक्षाओं) का क्या होगा? इसलिए बीच में इतना हमने अपनी ज़िम्मेदारी से रखा है। वर्ना इस ज्ञान में ऐसा नहीं होता, उसके बावजूद भी हमारी ज़िम्मेदारी से रखा।

शुद्धात्मा के अलावा बाकी सारा ही कचरा है, उनमें से एक, क्रमण और दूसरा, अतिक्रमण। जो कुछ भी शुद्धात्मा के बाहर हैं, वे सभी दोष हैं और उनका प्रतिक्रमण करना पड़ेगा।

यह स्वरूप का ज्ञान प्राप्त किया, लेकिन भीतर माल स्टॉक में है इसलिए अतिक्रमण होते हैं और उनका प्रतिक्रमण कर लेना पड़ता है। ये प्रतिक्रमण हमें, 'शुद्धात्मा' को नहीं करने हैं, ये तो इन मन-वचन-काया से करवाने हैं। 'मैं करता हूँ' ऐसा भाव निकल गया इसलिए स्वरूप से शुद्ध हैं, इसीलिए खुद को प्रतिक्रमण नहीं करने होते। 'शुद्धात्मा' खुद यदि प्रतिक्रमण करेगा, तब तो पोइज़न (ज़हर) हो जाएगा। 'खुद' 'शुद्धात्मा' प्रतिक्रमण नहीं करता, लेकिन मन-वचन-काया से करवाता है। यह तो अक्रम मार्ग है इसलिए पहले स्वरूप ज्ञान में बैठकर फिर कर्ज़ा पूरा करना है। अक्रम मार्ग में तो पहले जलन बंद करके फिर कर्ज़ा चुकाना है, जबकि क्रमिक मार्ग में तो कर्ज़ा चुकाते-चुकाते ज्ञान में आते हैं।

प्रश्नकर्ता : आपके स्व-मुख से यह खुलासा सुना तो हमें संतोष हुआ।

दादाश्री : अर्थात् इसमें आप मुक्त ही हो।

बोलो, अब फिर जहाँ प्रतिक्रमण भी साथ में होते जाते हैं, वहाँ पर कौन नाम लेगा?

प्रश्नकर्ता : हमारे इस शरीर से रात-दिन प्रतिक्षण प्रतिक्रमण होते ही रहते हैं। इससे अभी प्रतिक्रमण की शुरुआत होने से पहले ही अतिक्रमण अदृश्य हो जाता है।

दादाश्री : यह विज्ञान है। यानी यह विज्ञान तुरंत ही काम करने वाला है। यह अक्रम विज्ञान पूरा सिद्धांत ही है और सिद्धांत ही फल देगा। यह 'अक्रम विज्ञान' है। विज्ञान अर्थात् तुरंत फल देने वाला। जहाँ कर्तापना न हो, उसे 'विज्ञान' कहते हैं और जहाँ कर्तापना हो, उसे 'ज्ञान' कहते हैं। विचारशील व्यक्ति हो तो उसे ऐसा लगेगा न, कि हमने कुछ भी नहीं किया और यह क्या है! वह अक्रम विज्ञान की बलिहारी है!

यह अक्रम मार्ग है इसलिए आपको क्या करना है? खुद को नहीं करना है। आपको चंदूभाई से कहना है कि, 'चंदूभाई, आपने यह अतिक्रमण किया है, इसलिए प्रतिक्रमण करो।' क्योंकि 'आप' तो छूट (मुक्त हो) गए लेकिन जब ये 'चंदूभाई' छूट जाएँगे तभी 'आप' छूट पाएँगे। इन परमाणुओं को साफ करके भेजना पड़ेगा। निरंतर जानना, वह 'अपना' काम और निरंतर करना, वह 'चंदूभाई' का काम। 'चंदूभाई' नौकर और 'आप' सेठ। हाँ! जिसने अतिक्रमण किया है, उसी से प्रतिक्रमण करवाना है। 'आपको' नहीं करना है। आप उसे जानने वाले, चंदूभाई क्या कर रहे हैं, आप उन्हें जानने वाले, फिर क्या हर्ज है? भगवान महावीर भी यही करते थे। भगवान महावीर एक ही *पुद्गल* को देखते रहते थे, निरंतर। इन सभी लोगों के *पुद्गल* को नहीं देखते थे। एक (खुद का) ही *पुद्गल* देखते थे।

यह तो आसान मार्ग है। चाबियों से तुरंत ही ताले खुल जाते हैं! ऐसा संयोग अन्य किसी काल में नहीं मिलेगा। यह तो अक्रम मार्ग है! एक्सेप्शनल (अपवाद) केस है! ग्यारहवाँ आश्चर्य है! यहाँ काम निकाल लेना। ऐसे प्रतिक्रमण से लाइफ (ज़िंदगी) भी सुंदर गुज़रती है और मोक्ष में जाते हैं!

जय सच्चिदानंद

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में सत्संग कार्यक्रम

अडालज

31 अगस्त से 7 सितम्बर (शनि से शनि) - **आप्तवाणी 14 भाग-4 पर सत्संग पारायण**

नोट : आप्तवाणी-14 भाग-4 गुजराती बुक के पेज नंबर 19 से वाचन होगा. (हिन्दी-अंग्रेजी में ट्रान्सलेशन उपलब्ध रहेगा.)

सूचना : रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। रजिस्ट्रेशन की अधिक जानकारी **Akonnect** ऐप के द्वारा दी जाएगी.

8 सितम्बर (रवि) - **पूज्यश्री के दर्शन का कार्यक्रम** (गुरुपूर्णिमा के दर्शन)

वडोदरा

परम पूज्य दादा भगवान का 117वाँ जन्मजयंती महोत्सव - 10 से 15 नवम्बर

10 से 13 नवम्बर - सत्संग, 14 नवम्बर - जन्मजयंती दिवस, 15 नवम्बर - ज्ञानविधि

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **मुंबई :** 9323528901, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा :** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687, **भावनगर :** 9313882288, **अहमदाबाद (दादा दर्शन) :** 9574001445, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली :** 9810098564, **बैंगलूर :** 9590979099, **कोलकता :** 9830080820
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

राले : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 28 जून से 2 जुलाई 2024

सत्संग

ज्ञानविधि

दर्शन

न्यू जर्सी : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 4 से 8 जुलाई 2024

स्वागत

सत्संग

ज्ञानविधि

अमेरिका के युथ द्वारा आयोजित पूज्य नीरूमाँ के ज्ञानदिन का उत्सव : ता. 8 जुलाई 2024

अगस्त 2024
वर्ष-19 अंक-10
अखंड क्रमांक - 226

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Licensed to Post Without Pre-payment
No. PMG/NG/030/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

जानना, वह 'अपना' काम और करना, वह पुद्गल का काम

यह अक्रम मार्ग है इसलिए आपको क्या करना है? खुद को नहीं करना है। आपको चंदूभाई से कहना है कि, 'चंदूभाई, आपने यह अतिक्रमण किया है, इसलिए प्रतिक्रमण करो।' क्योंकि आप तो छूट (मुक्त हो) गए लेकिन ये 'चंदूभाई' छूट जाएँगे तभी 'आप' छूट पाएँगे। इन परमाणुओं को साफ करके भेजना पड़ेगा। निरंतर जानना, वह 'अपना' काम और निरंतर करना, वह 'चंदूभाई' का काम। 'चंदूभाई' नौकर और 'आप' सेठ। हाँ! जिसने अतिक्रमण किया है, उसी से प्रतिक्रमण करवाना है। 'आपको' नहीं करना है। आप उसे जानने वाले, चंदूभाई क्या कर रहे हैं, आप उन्हें जानने वाले, फिर क्या हर्ज है? भगवान महावीर भी यही करते थे। भगवान महावीर एक ही *पुद्गल* को देखते रहते थे, निरंतर। इन सभी लोगों के *पुद्गल* को नहीं देखते थे। एक (खुद का) ही *पुद्गल* देखते थे।

-दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner.
Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhatral - Pratappura Road,
At - Chhatral, Tal : Kalol, Dist. Gandhinagar – 382729.